1 भाषा, लिपि और व्याकरण

➡ बातों-बातों में

1. भावों और विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम **भाषा** है।
2. नेताजी का भाषण देना भाषा का **मौखिक** रूप है।
3. बोली भाषा का छोटा और क्षेत्रीय रूप है। यह सामान्य बोलचाल की भाषा है। बोली का कोई साहित्य नहीं होता।
4. लिखने की विधि **लिपि** कहलाती है।
5. व्याकरण के **तीन** अंग हैं—
   1. वर्ण विचार, 2. शब्द विचार, और 3. वाक्य विचार।

➡ लिखित में

1. **भाषा के दो रूप हैं—**

   1. मौखिक भाषा— बोलकर और सुनकर अपने विचारों या भावों का आदान-प्रदान करना **मौखिक भाषा** कहलाता है। जैसे— कहानी सुनाना, आपस में बातचीत करना, रेडियो सुनना आदि मौखिक भाषा के उदाहरण हैं।

   2. लिखित भाषा— लिखकर और पढ़कर अपने भावों-विचारों का आदान-प्रदान करना **लिखित भाषा** कहलाता है। इस भाषा को प्रयत्न करके सीखना पड़ता है। समाचार-पत्र या पत्रिकाएँ पढ़ना, छात्रों का लिखित कार्य करना, ई-मेल आदि लिखित भाषा के उदाहरण हैं।
2. **उपभाषा—** इसका क्षेत्र बोली की अपेक्षा अधिक बड़ा होता है। एक उपभाषा में एक से अधिक बोलियाँ होती हैं। इसका साहित्य मौखिक के साथ-साथ लिखित भी होता है। जैसे— अवधी, मैथिली आदि।
3. सरकारी कामकाजों में प्रयुक्त भाषा **राजभाषा** कहलाती है। हिंदी को भारतीय संविधान द्वारा 14 सितंबर, 1949 को अनुच्छेद 343 के अंतर्गत 'राजभाषा' का दर्जा प्रदान किया गया। इसीलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। भारत बहुभाषी देश है, इसलिए सुविधा हेतु राज्यों को अंग्रेजी तथा वहाँ की मातृभाषा में कार्यानुमति प्रदान करता है।
4. भाषा के शुद्ध प्रयोग का ज्ञान कराने वाला शास्त्र **व्याकरण** कहलाता है।
5. ज्ञान के संचित कोष को **साहित्य** कहते हैं। साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है—
   1. गद्य साहित्य और 2. पद्य साहित्य।

   1. गद्य साहित्य— इसमें भाव या विचारों को सीधे तार्किक रूप में व्यक्त किया जाता है। यह साहित्य गद्य विधा पर आधारित है। इसके अंतर्गत उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा आदि विधाएँ आती हैं।

   2. पद्य साहित्य— इसमें भाव या विचारों को लय, तुक, छंद आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसके अंतर्गत दोहा, कविता, गीत, चौपाई, छंद आदि आते हैं।

(ख) 1. (iii) पत्र 2. (ii) बोली
3. (i) साहित्य 4. (iii) अवधी
5. (i) रोमन

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. मौखिक भाषा 2. राजभाषा
3. बाईस 4. अंग्रेजी

(ङ)

भाषा	लिपि
नेपाली	देवनागरी
फ्रांसीसी	रोमन
पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	फारसी
डोगरी	देवनागरी

➡ सोच-समझ से

* व्याकरण का ज्ञान भाषा को शुद्ध, स्पष्ट और प्रभावी ढंग से बोलने, लिखने और समझने के लिए आवश्यक है, क्योंकि यह भाषा के

नियमों और संरचना को समझाता है, जिससे भ्रम से बचा जा सके, विचारों का सही संप्रेषण हो और भाषा की सुंदरता व स्थिरता बनी रहे, जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक संचार दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।

❋ साहित्य को समाज का दर्पण (आईना) इसलिए कहते हैं क्योंकि यह समाज की वास्तविक, जीवंत छवि, उसकी संस्कृति, रीति-रिवाजों, समस्याओं, सुख-दुख, विचारों और भावनाओं को प्रतिबिंबित (दर्शाता) करता है। जैसे— दर्पण में हम अपना अक्स देखते हैं, वैसे ही साहित्य में हम अपने समाज को देख पाते हैं, उसकी अच्छाइयों और बुराइयों को समझकर आत्म-चिंतन कर पाते हैं और सकारात्मक बदलाव की प्रेरणा पाते हैं।

➡ **कुछ करके देखिए**

❋ हिंदी गद्य साहित्य के रचनाकार और उनकी रचना

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल — चिंतामणि
2. प्रेमचन्द — गोदान
3. विष्णु प्रभाकर — आवारा मसीहा
4. भीष्म साहनी — तमस
5. महादेवी वर्मा — पथ के साथी

❋ हिंदी पद्य साहित्य के कवि और उनकी रचनाएँ

1. रहीमदास — रहीम दोहावली
2. कबीरदास — बीजक
3. सूरदास — साहित्य लहरी
4. रामधारी सिंह 'दिनकर' — उर्वशी
5. तुलसीदास — श्रीरामचरितमानस

❋ छात्र अध्यापक और अभिभावकों की सहायता से समझें।

✤✤

➡ **बातों-बातों में**

1. वर्णों या ध्वनि-चिन्ह्ों का समूह **वर्णमाला** कहलाता है।
2. दो संयुक्त व्यंजन— क्ष, त्र हैं।

2 वर्ण-विचार

3. स्वर के तीन भेद हैं— 1. ह्रस्व स्वर, 2. दीर्घ स्वर और 3. प्लुत स्वर।
4. स्पर्श व्यंजनों को पाँच वर्गों में विभाजित किया गया है।

➡ **लिखित में**

(क) 1. वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते, **वर्ण** कहलाती है।

2. जिन स्वरों का उच्चारण करते समय कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार है— अ, इ, उ, ऋ। लेकिन जिन स्वरों का उच्चारण करते समय ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है— आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

3. अंत:स्थ व्यंजनों का उच्चारण स्वर और व्यंजनों के मध्य का होता है। इनकी संख्या चार है— य, र, ल, व। जबकि **ऊष्म व्यंजन** के उच्चारण में हवा मुँह से रगड़ खाकर बाहर आती है। इनकी संख्या चार है— श, ष, स, ह।

4. **अनुस्वार—** यह नासिक्य व्यंजन है। इसका उच्चारण नाक से होता है। इसका चिन्ह् (ं) है। इसे स्वर या व्यंजन के ऊपर लगाया जाता है। जैसे— हंस, पंकज आदि। जबकि **अनुनासिक** का प्रयोग करते समय हवा नाक और मुँह दोनों से निकलती है। इसका चिन्ह् चंद्रबिंदु (ँ) है। जैसे— गाँव, चाँद आदि।

5. जो वर्ण विदेशी भाषाओं से हिंदी में आए हैं, **आगत वर्ण** कहलाते हैं। ये वर्ण इस प्रकार

हैं– ऑ– इसका प्रयोग आ की मात्रा (ॉ) के साथ अंग्रेजी शब्दों में किया जाता है। जैसे– डॉक्टर, कॉलेज, फुटबॉल आदि। ज़्, फ़् – ये फारसी से लिए गए वर्ण हैं। इनका प्रयोग नुक्ता (.) के रूप में किया जाता है; जैसे– मेज़, ज़ोरदार, फ़र्स आदि।

(ख) 1. (iii) वर्ण 2. (i) इ
3. (ii) ओष्ठ 4. (i) ऊष्म व्यंजन

(ग) 1. (×) 2. (✓) 3. (×) 4. (×) 5. (✓)

(घ) 1. वर्णमाला 2. दो
3. आगत वर्ण 4. वर्ण-विच्छेद

➡ सोच-समझ से

इक्यावन, कृतज्ञ,
क्रंदन, जघन्य,
दृढ़ता, महोदय,
व्यापार, स्पर्श,
स्वतंत्रता, संतोष,
क्षमा

➡ कुछ करके देखिए

छात्र अध्यापक की सहायता से सूची तैयार करें।

✤✤

3 संधि

➡ बातों-बातों में

1. निकटवर्ती ध्वनियों के परस्पर मेल को संधि कहते हैं।
2. संधि के तीन भेद हैं।
3. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं- 1. दीर्घ संधि, 2. गुण संधि, 3. वृद्धि संधि, 4. यण संधि, 5. अयादि संधि।
4. विसर्ग का किसी व्यंजन या स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

➡ लिखित में

(क) 1. दो समीपवर्ती वर्णों के मिलने की प्रक्रिया को संधि कहते हैं। जैसे - पुस्तक + आलय = पुस्तकालय, जगत् + ईश = जगदीश।
2. **गुण संधि**- जब 'अ' या 'आ' के बाद ह्रस्व या दीर्घ 'इ', 'उ', 'ऋ' हो तो क्रमश: 'ए', 'ओ', 'अर्' हो जाते हैं; जैसे- नर + इंद्र = नरेंद्र, राजा + इंद्र = राजेंद्र आदि।
3. दो स्वरों का परस्पर मेल होने पर उनमें जो परिवर्तन आता है, उसे स्वर संधि कहते हैं, जबकि व्यंजन संधि में किसी व्यंजन का अन्य व्यंजन या स्वर के साथ मेल होता है तो उसमें होने वाले परिवर्तन को व्यंजन संधि कहते हैं।
4. **यण संधि**– जब इ, ई, उ, ऊ या ऋ के बाद कोई अन्य स्वर आए तो इ/ई का 'य्', उ/ऊ का 'व' तथा ऋ का 'र्' हो जाता है। जैसे- इ +अ = य गति + अवरोध = गत्यवरोध, उ + अ = व अनु + अय = अन्वय, ऋ + अ = र पितृ + अर्पण = पित्रर्पण।
5. **स्वर संधि**- दो स्वरों का परस्पर मेल होने पर उनमें जो परिवर्तन आता है, उसे **स्वर संधि** कहते हैं। इसके मुख्य पाँच भेद हैं–

(i) दीर्घ संधि– जैसे– अ + अ = आ
मत + अनुसार = मतानुसार

(ii) गुण संधि– जैसे– अ + इ = ए
नर + इंद्र = नरेंद्र

(iii) वृद्धि संधि– जैसे– अ + ए = ऐ
एक + एक = एकैक

(iv) यण संधि– जैसे– ऋ + आ = रा
मातृ + आदेश = मात्रादेश

(v) अयादि संधि– जैसे– ए + अ = अय
ने + अन = नयन

(ख) 1. (ii) निः + रोग 2. (i) सज्जन
3. (iii) अति + अधिक 4. (iii) विसर्ग संधि

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. महात्मा 2. मनोरथ
3. हिमालय 4. अत्याचार
5. सदैव

➡ सोच-समझ से

दीर्घ स्वर संधि—

पुष्प + अवली = पुष्पावली (अ+अ = आ)
कवि + इच्छा = कवीच्छा (इ + इ = ई)
सिन्धु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि (उ + ऊ = ऊ)
मातृ + ऋण = मातृण (ऋ + ऋ = ऋ)

गुण स्वर संधि—

उप + इंद्र = उपेंद्र (अ + इ = ए)
पर + उपकार = परोपकार (अ+उ = ओ)
महा + उत्सव = महोत्सव (आ + उ = ओ)
सर्व + ईश्वर = सर्वेश्वर (अ + ई = ए)

वृद्धि स्वर संधि—

सदा + एव = सदैव (आ + ए = ऐ)
लोक + एषणा = लोकैषणा (अ + ए = ऐ)
परम + औदार्य = परमौदार्य (अ+औ = औ)
वन + ऐश्वर्य = वनैश्वर्य (अ + ऐ = ऐ)

यण स्वर संधि—

यदि + अपि = यद्यपि (इ + अ = य)
सु + आगत = स्वागत (उ + आ = व)
मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा (ऋ + आ = रा)
अनु + इति = अन्विति (उ + इ = वि)

अयादि संधि—

चे + यन = नयन (ए + अ = अय)
पौ + अन = पावन (औ + अ = आव्)
नौ + इक = नाविक (औ + इ = आवि)
भौ + उक = भावुक (औ + उ = आवु)

➡ कुछ करके देखिए

1. विद्यालय — दीर्घ स्वर संधि
2. पवन — अयादि संधि
3. मनोरथ — विसर्ग संधि
4. गजानन — दीर्घ स्वर संधि
5. नरेंद्र — गुण स्वर संधि
6. नायक — अयादि संधि
7. विद्यार्थी — दीर्घ स्वर संधि
8. सम्मान — व्यंजन संधि

✤✤

4 शब्द-रचना

➡ बातों-बातों में

1. जब कोई शब्द व्याकरण के नियमों में बँधकर किसी वाक्य में प्रयोग होता है तो वह **पद** कहलाता है।
2. जो शब्द विदेशी भाषाओं के हैं किंतु अब हिंदी भाषा में स्वतंत्र रूप से प्रयोग हो रहे हैं, **विदेशी शब्द** कहलाते हैं।
3. प्रयोग के आधार पर शब्दों को **दो** भागों में बाँटा गया है।
4. अविकारी शब्द— (i) क्रियाविशेषण, (ii) संबंधबोधक, (iii) समुच्चयबोधक, (iv) विस्मयादिबोधक और (v) निपात होते हैं।

➡ लिखित में

1. वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। **वर्ण** भाषा की सबसे छोटी इकाई है जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते; जैसे— अ, क, म, जबकि शब्द एक या एक से अधिक वर्णों का सार्थक समूह होता है जिसका कोई अर्थ हो; जैसे— कमल, घर, सरल शब्दों में, वर्ण अक्षर हैं और कई अक्षरों (वर्णों) को मिलाकर शब्द बनते हैं; जैसे— क + म + ल = कमल।
2. **तत्सम शब्द—** वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिंदी में ज्यों-के-त्यों लिए गए हैं, **तत्सम शब्द** कहलाते हैं। जैसे—स्वर्ण, अग्नि,

दुग्ध, रात्रि, सूर्य आदि। जबकि **तद्भव शब्द** मूल रूप से संस्कृत के हैं किंतु रूप परिवर्तन के पश्चात हिंदी में ग्रहण किए गए हैं, **तद्भव शब्द** कहलाते हैं। जैसे— सोना, आग, दूध, रात, सूरज आदि।

3. **देशज शब्द—** ऐसे शब्द जो भारत की विभिन्न बोलियों में प्रयोग किए जाते हैं और हिंदी में भी प्रयोग हो रहे हैं, **देशज शब्द** कहलाते हैं; जैसे— खिड़की, पेट, डिबिया, लोटा, पगड़ी, झोंपड़ी, खटिया आदि।
4. **सार्थक शब्द—** वे होते हैं जिनका कोई निश्चित और स्पष्ट अर्थ होता है; जैसे— कमल, रोटी, पानी जबकि निरर्थक शब्द वे होते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं निकलता या जो ध्वनि के लिए प्रयोग होते हैं; जैसे— रोटी-वोटी में वोटी या पानी-वानी में वानी। मुख्य अंतर अर्थ की उपस्थिति और अनुपस्थिति का है। सार्थक शब्द अर्थपूर्ण होते हैं और निरर्थक शब्द अर्थहीन होते हैं।
5. **संकर शब्द—** जब दो भिन्न-भिन्न भाषाओं से एक नया शब्द बन जाता है, तो उसे संकर शब्द कहते हैं; जैसे— कामधंधा काम (फारसी) + धंधा (हिंदी), रेलगाड़ी = रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी (हिंदी)।

(ख) 1. (iii) सार्थक 2. (i) राष्ट्रपति 3. (ii) पत्थर 4. (i) फारसी 5. (i) मुमुक्षु

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. यौगिक 2. फारसी 3. देशज 4. तत्सम 5. बदन

➡ सोच-समझ से

❋ हवा — पवन, वायु, समीर, वात, प्रकंपन।
अग्नि — आग, अनल, पावक, वह्नि।
आकाश — गगन, नभ, व्योम, आसमान, अंबर।
जल — वारि, पानी, नीर, सलिल, तोय।
नदी — सरिता, तटिनी, तरंगिणी, निर्झरिणी।
पवन — वायु, समीर, हवा, अनिल।
(छात्र अध्यापक की सहायता से सूची और भी बढ़ा सकते हैं।)

❋ छात्र अध्यापक की सहायता से समाधान करें।

➡ कुछ करके देखिए

1. **पर्यायवाची शब्द**
कमल— पंकज, सरोज, जलज।
अर्धांगिनी— पत्नी, भार्या, गृहलक्ष्मी।

2. विलोम शब्द

शब्द	**विलोम**
ज्ञात	अज्ञात
साधु	दुष्ट

3. जो किसी से डरता न हो — निडर
जो कम खाता हो — अल्पाहारी

4. अभय — निडर
उभय — दोनों
अविराम — लगातार
अभिराम — सुंदर

✤✤

5 उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास

➡ बातों-बातों में

1. उपसर्ग का प्रयोग शब्दों के शुरू में होता है।
2. संस्कृत के दो उपसर्ग— अधः और अनु हैं।
3. फारसी के उपसर्गों से बने तीन शब्द— गैरकानूनी, गैरहाजिर और गैरमतलब हैं।

➡ लिखित में

1. किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाने वाले शब्द **उपसर्ग** कहलाते हैं; जैसे— अबोध, अनपढ़, अवगुण आदि।
2. उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं—
(i) हिंदी के उपसर्ग

नि – के बिना = निडर, निहत्था
भर – पूरा = भरपेट, भरमार

(ii) संस्कृत के उपसर्ग
अंत/अंतर् – अंदर = अंत:करण, अंतर्मुखी
अधि –ऊँचा/श्रेष्ठ = अध्यक्ष, अधिकार

(iii) आगत/विदेशी उपसर्ग
अल – निश्चित, इसलिए = अलबत्ता, अलसुबह
ना – नहीं, अभाव = नापसंद, नालायक

3. प्र और अनु उपसर्ग हिंदी और संस्कृत दोनों में प्रयोग किए जाते हैं।

(ख) 1. (i) सम् 2. (ii) अति
3. (ii) गम 4. (iii) ब

(ग)

सब जज	✓	रेलगाड़ी	×
सम्मान	✓	पनचक्की	×
त्रिनेत्र	✓	अमर	✓
सरताज	✓	पत्तियाँ	×
स्कूटर	×	बनाम	×
चंद्रमुख	×	पुरस्कार	✓
उन्नीस	✓	जेबघड़ी	×

(घ)

उपसर्ग	**शब्द**	**उपसर्ग**	**शब्द**
अव	अवगुण	सु	सुगंध
गैर	गैरजिम्मेदार	नि	निकम्मा
दु	दुर्गम	सर	सरहद
हेड	हेडमास्टर	अधि	अधिपति
कु	कुपुत्र	स्व	स्वदेश
बे	बेईमान	अति	अतिरिक्त

➡ सोच-समझ से

'प्र' उपसर्ग से बने पाँच शब्द—

1. प्रकाश (प्रकाश = रोशनी, प्र + काश = चमकना/रोशनी)
अर्थ परिवर्तन— प्रकाश – मूल शब्द = काश (चमकना / दिखना)। काश का अर्थ चमकना या दिखना है, 'प्र' जुड़ने से 'प्रकाश' (रोशनी, उजाला) बन जाता है, जो चमकने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और विस्तृत करता है।

2. प्रबल (बल + प्र = बहुत बलवान)
अर्थ परिवर्तन—प्रबल— मूल शब्द = बल (शक्ति)। बल का अर्थ शक्ति है, 'प्र' जुड़ने से 'प्रबल' (बहुत शक्तिशाली, अधिक बलवान) बन जाता है, यानी शक्ति बढ़ गई है।

3. प्रगति (गति = चाल, प्र + गति = आगे बढ़ना)
अर्थ परिवर्तन—प्रगति— मूल शब्द = गति (चाल)। 'गति' का अर्थ चाल है, 'प्र' जुड़ने से 'प्रगति' (आगे बढ़ना, उन्नति) बनती है जो सामान्य चाल से आगे बढ़ने का भाव देती है।

4. प्रयोग (योग = जोड़, प्र + योग = उपयोग / इस्तेमाल)
अर्थ परिवर्तन—प्रयोग— मूल शब्द = योग (जुड़ना / संयोजन)। 'योग' का अर्थ जुड़ना या संयोजन है, 'प्र' जुड़ने से (इस्तेमाल करना, उपयोग करना) बन जाता है। यानी किसी चीज का विशेष उपयोग करना।

5. प्रसिद्ध (सिद्ध = ज्ञात, प्रसिद्ध = बहुत प्रसिद्ध / मशहूर)
अर्थ परिवर्तन—प्रसिद्ध मूल शब्द = सिद्ध (सिद्ध किया हुआ / ज्ञात)। 'सिद्ध' का अर्थ ज्ञात या प्रमाणित है, 'प्र' जुड़ने से 'प्रसिद्ध' (बहुत मशहूर, जो सबको पता हो) बन जाता है, यानी प्रसिद्धि की मात्रा बढ़ जाती है।

* हाँ, एक शब्द में एक से अधिक उपसर्ग हो सकते हैं और ऐसे कई शब्द हैं; जैसे—

1. अनाचार = अ + आ + चार
(अर्थ— बुरा आचरण)
2. व्याकरण = वि + आ + करण
(अर्थ— विशेष नियम या शास्त्र)
3. स्वावलंबन = स्व + आ + लंबन
(अर्थ— स्वयं पर निर्भर रहना)

➡ कुछ करके देखिए

छात्र अध्यापक महोदय के साथ सहयोग से करके देखें।

प्रत्यय

➡ बातों-बातों में

1. हिन्दी भाषा में दो प्रकार के प्रत्यय होते हैं—1. कृत् प्रत्यय और 2. तद्धित प्रत्यय।
2. तद्धित प्रत्यय से बने शब्दों को तद्धितांत कहते हैं।
3. 'लखनवी' शब्द का मूल शब्द 'लखनऊ' है इसमें 'ई' प्रत्यय जुड़ा है, जो संबंध वाचक तद्धित प्रत्यय है, इसका अर्थ है 'लखनऊ से संबंधित या लखनऊ का रहने वाला'।

➡ लिखित में

1. जो शब्दांश शब्द के अंत में जुड़कर नवीन शब्द का निर्माण करते हैं उसे **प्रत्यय** कहते हैं; जैसे— तैर + आक = तैराक, फल + वाला = फलवाला।
2. हिंदी में प्रत्यय के दो भेद होते हैं—
   1. कृत् प्रत्यय और 2. तद्धित प्रत्यय।
   1. कृत् प्रत्यय— वे प्रत्यय जो धातुओं के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें **कृत् प्रत्यय** कहते हैं। कृत् प्रत्यय से बनने वाले शब्दों को 'कृदंत' कहते हैं। जैसे— पढ़ (धातु)+ आई (प्रत्यय) = पढ़ाई, खेल (धातु) + औना (प्रत्यय) = खिलौना।
   2. तद्धित प्रत्यय— जो शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण या अव्यय शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें **तद्धित प्रत्यय** कहते हैं। जैसे— लोहा + आर (संज्ञा + प्रत्यय) = लोहार, मीठा + स (विशेषण + प्रत्यय) = मिठास।
3. उपसर्ग शब्द के शुरू में जुड़कर अर्थ बदलते हैं; जैसे— 'प्र' + 'काश' = प्रकाश, जबकि प्रत्यय शब्द के अंत में जुड़कर अर्थ या व्याकरणिक रूप बदलते हैं; जैसे— खेल + ना = खेलना। दोनों ही नए शब्द बनाने में मदद करते हैं और भाषा को समृद्ध बनाते हैं।
4. कृत् प्रत्यय क्रिया (धातु) के अंत में लगते हैं; जैसे— लिख् + अक = लेखक, जबकि तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में लगते हैं; जैसे— बड़ा + आई = बड़ाई। मुख्य अंतर यह है कि कृत् प्रत्यय क्रिया से नया शब्द बनाते हैं और तद्धित प्रत्यय संज्ञा/विशेषण से नए शब्द बनाते हैं; दोनों के शब्द क्रमशः कृदंत और तद्धितांत कहलाते हैं।

(ख) 1. (ii) पिता 2. (iii) उआ 3. (i) आल 4. (iii) तैराक

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓)

(घ) 1. चिंतित, 2. खटोला, 3. खटास, 4. नायिका, 5. गिलास, 6. सोनार।

➡ सोच-समझ से

1.	निपुण	(विशेषण)	→	निपुणता	(संज्ञा)	निपुण + ता
2.	कठोर	(विशेषण)	→	कठोरता	(संज्ञा)	कठोर + ता
3.	चतुर	(विशेषण)	→	चतुराई	(संज्ञा)	चतुर + आई
4.	आलसी	(विशेषण)	→	आलस्य	(संज्ञा)	आलस + य
5.	बीमार	(विशेषण)	→	बीमारी	(संज्ञा)	बीमार + ई
6.	सफेद	(विशेषण)	→	सफेदी	(संज्ञा)	सफेद + ई
7.	बड़ा	(विशेषण)	→	बड़ाई	(संज्ञा)	बड़ा + ई
8.	थका हुआ	(विशेषण)	→	थकावट	(संज्ञा)	थक + आवट
9.	महान	(विशेषण)	→	महानता	(संज्ञा)	महान + ता
10.	गर्म	(विशेषण)	→	गर्मी	(संज्ञा)	गर्म + ई

➡ कुछ करके देखिए

आइन = ठकुराइन, गिरि = नीलगिरि, ऐला = कसैला, आक = तैराक, नाक = खतरनाक, आपा = बुढ़ापा।

छात्र अध्यापक की सहायता से वाक्य प्रयोग करें।

समास

➡ बातों-बातों में

1. समास के छः भेद होते हैं—
   (i) अव्ययीभाव समास, (ii) तत्पुरुष समास, (iii) कर्मधारय समास, (iv) द्विगु समास, (v) द्वंद्व समास और (vi) बहुव्रीहि समास।
2. सामासिक पदों के दो नाम हैं—
   पहला पूर्वपद और दूसरा उत्तरपद।
3. द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण होता है।
4. द्वंद्व समास का उदाहरण— चाय-कॉफी = चाय या कॉफी।

➡ लिखित में

1. जब दो या दो से अधिक शब्द मिलकर एक नए शब्द की रचना करते हैं तो उस रचना विधि को **समास** कहते हैं।
   जैसे— गज + आनन = गजानन।
2. **कर्मधारय समास**— जिस समस्तपद का पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य अथवा दोनों में उपमेय और उपमान का संबंध होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।
   जैसे— अंधकूप = अंधकार है जिस कूप में।
3. जिस समस्त पद में पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण और उत्तरपद विशेष्य होता है, उसे द्विगु समास कहते हैं; जैसे— पंचवटी = पाँच वटों का समूह, जबकि कर्मधारय समास में समस्तपद का पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य अथवा दोनों में उपमेय और उपमान का संबंध होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे— कुसुम कोमल = कुसुम के समान कोमल।
4. **संधि** वर्णों (अक्षरों) का मेल है जिससे ध्वनि परिवर्तन होता है; जैसे— देव + आलय = देवालय, जबकि समास शब्दों/पदों का मेल है जिससे नया शब्द बनता है और विभक्ति चिन्ह् (जैसे— का, के) का लोप हो जाता है; जैसे— राजा का पुत्र = राजपुत्र। संधि में वर्णों का विकार होता है, जबकि समास में पदों का संक्षेपण (छोटा करना) होता है, जिसका मुख्य उद्देश्य अर्थ को संक्षिप्त और प्रभावी बनाना है।
   संधि में दो वर्णों का योग होता है, जबकि समास में दो पदों का योग है। इसी प्रकार, संधि को तोड़ना 'विच्छेद' कहलाता है, जबकि समास को तोड़ना 'विग्रह' कहलाता है।
5. बहुव्रीहि समास— जिस समस्त पद में दोनों ही पद गौण होते हैं और दोनों मिलकर किसी तीसरे प्रधान पद के बारे में बताते हैं, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे— विषधर = विष को धारण करने वाला अर्थात् शिवजी।

(ख) 1. (ii) प्रत्येक दिन
2. (iii) पाप और पुण्य
3. (i) बहुव्रीहि समास का

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✗) 5. (✗)

(घ)

समस्तपद	**विग्रह**	**समास नाम**
अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समूह	द्विगु समास
सीता-राम	सीता और राम	द्वंद्व समास
गगनचुंबी	गगन को चूमने वाला	कर्म तत्पुरुष समास
श्वेतांबर	श्वेत है जो अंबर	कर्मधारय समास
तिरंगा	तीन हैं रंग जिसके, अर्थात् राष्ट्रध्वज	बहुव्रीहि समास
फिल्म-निर्माता	फिल्म का निर्माता	संबंध तत्पुरुष समास
चक्रधर	चक्र धारण करने वाला अर्थात् श्रीकृष्ण	बहुव्रीहि समास

सोच-समझ से

समस्त पद	**कर्मधारय समास का विग्रह**	**बहुव्रीहि समास का विग्रह**
महात्मा	महान है जो आत्मा	महान है आत्मा जिसकी
चौमासा		चार हैं मास जिसके अर्थात् वर्षा ऋतु
षडानन	छह हैं जो आनन	छह हैं आनन जिसके अर्थात् कार्तिकेय
दशानन	दस हैं जो आनन	दस हैं आनन जिसके अर्थात् रावण

➡ कुछ करके देखिए

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

✤✤

6 संज्ञा

➡ बातों-बातों में

1. ज्योतिबा फुले, जयपुर तथा फुटबॉल शब्द में व्यक्तिवाचक संज्ञा है।
2. भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण पाँच प्रकार से होता है।
3. विद्यार्थियों, पुस्तकें जातिवाचक संज्ञा के उदाहरण हैं।
4. 'पढ़ना' क्रिया से 'पढ़ाई' भाववाचक संज्ञा बनेगी।

➡ लिखित में

(क) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी अथवा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को **संज्ञा** कहते हैं; जैसे— विराट कोहली, हैदराबाद, कार और मित्रता आदि।

2. जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु, स्थान की सामूहिकता अथवा जाति का बोध होता है, उन्हें **जातिवाचक संज्ञा** कहते हैं। जैसे— विद्यार्थियों ने आंदोलन किया। मेज पर पुस्तकें रखी हैं।

3. जब किसी विशेष व्यक्ति के नाम का प्रयोग किसी के गुणों को बताने के लिए करते हैं तब व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा बन जाती है। जैसे— भारत में जयचंदों की कमी नहीं है।

4. (i) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाना— मित्र-मित्रता, बूढ़ा-बुढ़ापा।
(ii) क्रिया से भाववाचक संज्ञा बनाना— थकना— थकावट, हँसना-हँसी।
(iii) विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाना— निर्धन— निर्धनता, मीठा-मिठास।
(iv) सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा बनाना— अहं— अहंकार, स्व-स्वत्व।
(v) अव्यय शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना— वाह— वाहवाही, दूर — दूरी।

(ख) 1. (iii) भाववाचक संज्ञा
2. (i) व्यक्तिवाचक संज्ञा
3. (ii) जातिवाचक संज्ञा

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. मानवता 2. चढ़ाई
3. सुंदरता 4. धिक्कार

➡ सोच-समझ से

शीश उठाकर पर्वत देता,
ऊँचे उठने का संदेश।
मन में गहराई लाने का,
सागर देता है उपदेश॥

संज्ञा शब्द—शीश, पर्वत, संदेश, मन, सागर, उपदेश।

➡ कुछ करके देखिए

तालाब	मंदिर
भौंरा	पढ़ाई
गाँव	विधायक
न्यूटन	वैज्ञानिक
मुखिया	रणथंभौर
जीवित	काढ़ा

✤✤

कारक

➡ बातों-बातों में

1. पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।
2. नित्य पुल्लिंग रहने वाले दो शब्द— भेड़िया, कौआ।
3. नित्य स्त्रीलिंग रहने वाले दो शब्द— गिलहरी, मैना।
4. 'नी' प्रत्यय से स्त्रीलिंग बने दो शब्द— ऊँटनी, चोरनी।

➡ लिखित में

(क) 1. शब्द के जिस रूप से स्त्री या पुरुष जाति के होने का बोध होता है, उसे **लिंग** कहते हैं। जैसे— शेर (पुल्लिंग) और शेरनी (स्त्रीलिंग)।

2. लिंग के दो भेद होते हैं—

1. पुल्लिंग— जो शब्द पुरुष-जाति के होने का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं। जैसे— घोड़ा, आदमी, कवि, मुर्गा आदि।

2. स्त्रीलिंग— जो शब्द स्त्री-जाति के होने का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे— घोड़ी, औरत, कवयित्री, मुर्गी आदि।

3. जिन शब्दों के अंत में 'आर', 'आस' तथा 'एरा' जुड़ा होता है, उनमें पुल्लिंग होता है। जैसे—

'आर' कुम्हार, लोहार, सुनार।
'आस' उल्लास, परिहास, विलास।
'एरा' लुटेरा, चचेरा, मौसेरा।

(ख) 1. (i) पुल्लिंग
2. (ii) मछली

7 संज्ञा के विकारः लिंग, वचन, कारक

3. (iii) हंस
4. (ii) ज्ञानवती

(ग) 1. (✓) 2. (×) 3. (×) 4. (×)

(घ) 1. दयावान 2. रानी
3. वीरांगना 4. विधुर
5. साध्वी

➡ सोच-समझ से

* हिंदी भाषा में प्राणियों का लिंग निर्धारण इसलिए सरल (या स्पष्ट) लगता है क्योंकि यह मुख्य रूप से प्राकृतिक लिंग (जैविक) और व्याकरणिक लिंग (शब्दों के गुण) पर आधारित है, जहाँ अधिकांश प्राणियों के नाम पुरुष/स्त्रीलिंग में अलग होते हैं; जैसे— बैल/गाय, नर/मादा और उनके विशेषण व क्रियाएँ भी लिंग अनुसार बदलती हैं, जिससे पहचान आसान हो जाती है, खासकर जब बाहरी शारीरिक अंतर (जैसे मोर के पंख, शेर की अयाल) मौजूद हों।
* छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

➡ कुछ करके देखिए

कक्षाध्यापक कक्षा में इस प्रकार समूह बनाकर संचालन करें।

वचन

➡ बातों-बातों में

1. केवल एकवचन में प्रयुक्त होने वाले दो शब्द सच, झूठ।
2. केवल बहुवचन में प्रयुक्त होने वाले दो शब्द लोग, दर्शन।
3. 'अध्यापक' का बहुवचन होगा 'अध्यापकों'।
4. 'घी' एकवचन का शब्द है।

➡ लिखित में

1. जिस शब्द से किसी प्राणी या वस्तु की संख्या के एक या एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे 'वचन' कहते हैं।
2. हिंदी में वचन के दो भेद हैं—

1. एकवचन— जिन शब्दों से किसी एक वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे— केला, संतरा, मेज, कुर्सी आदि।

2. बहुवचन— जिन शब्दों से किसी वस्तु के एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे— केले, संतरे, मेजें, कुर्सियाँ आदि।

3. जब शब्द के रूप से एक वस्तु का बोध हो, तब उसे एकवचन कहते हैं। इसी प्रकार, जब शब्द से अनेक वस्तुओं का बोध हो, तब उसे बहुवचन कहते हैं।
4. आदर/सम्मान के लिए एकवचन शब्द प्रायः बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—
   1. लाल बहादुर शास्त्री लोकप्रिय नेता थे।
   2. भैया रोज सुबह की सैर करने जाते हैं।

(ख) 1. (i) सम्मान प्रदर्शन हेतु
2. (iii) लोग 3. (i) एकवचन
4. (i) एकवचन

(ग) 1. (✓) 2. (×) 3. (×) 4. (×) 5. (✓)

(घ) 1. लेखकगण 2. गाय
3. रानियाँ 4. रचना

➡ सोच-समझ से

✻ 'वचन' (संख्या-बोध) का भाषा की शुद्धता पर गहरा प्रभाव पड़ता है क्योंकि यह संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया के रूप को बदलकर वाक्य की संरचना को सही रखता है, जिससे अर्थ स्पष्ट होता है और व्याकरणिक अशुद्धियाँ (जैसे— 'लड़का खेलता है' की जगह 'लड़के खेलता है') रुकती हैं; गलत वचन का प्रयोग भाषा को भ्रामक और अटपटा बना देता है, जबकि सही वचन भाषा को व्यवस्थित, सटीक और प्रभावी बनाता है, जिससे संचार की गुणवत्ता बढ़ती है।

➡ कुछ करके देखिए

1. गाय, 2. यक्ष, 3. क्षमा, 4. मामा, 5. माता, 6. ताली, 7. लीची, 8. चीनी, 9. नीला, 10. लाज।

कारक

➡ बातों-बातों में

1. संज्ञा/सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध बताने वाला शब्द कारक कहलाता है।
2. कारक चिन्ह् को 'परसर्ग' या 'विभक्ति चिन्ह्' के नाम से भी जानते हैं।
3. कारक के आठ भेद हैं।
4. संबोधन कारक के परसर्ग हे! ओह! अरे! हैं।

➡ लिखित में

1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया तथा वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध का पता चलता है, उसे कारक कहते हैं; जैसे—
   1. राम ने रावण को मारा।
   2. बालक गेंद से खेल रहा है।
   3. पानी में मछली रहती है।
2. कारक के आठ भेद हैं, जो इस प्रकार हैं—
   1. कर्ता कारक (परसर्ग-ने),
   2. कर्म कारक (परसर्ग -को),
   3. करण कारक (परसर्ग -से, के द्वारा, के साथ)
   4. संप्रदान कारक (परसर्ग - के लिए, को, के वास्ते)
   5. अपादान कारक (परसर्ग - से अलग होने के अर्थ में)
   6. संबंध कारक (परसर्ग -का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने)
   7. अधिकरण कारक (परसर्ग - में, पर)
   8. संबोधन कारक (परसर्ग-हे! ओह! अरे!)
3. कर्म कारक और संप्रदान कारक दोनों में 'को' विभक्ति लगती है, पर मुख्य अंतर यह है कि कर्म कारक में क्रिया का सीधा प्रभाव कर्म पर पड़ता है— (क्या या किसको का उत्तर), जबकि संप्रदान कारक में कुछ 'देने' या 'किसी के लिए' करने का भाव होता है (किसके लिए या किसे का उत्तर), जहाँ कर्म प्रत्यक्ष वस्तु होती है और संप्रदान अप्रत्यक्ष प्राप्तकर्ता होता है।
4. करण कारक (साधन/माध्यम) और अपादान कारक (अलगाव/स्रोत) दोनों में 'से' चिन्ह् लगता है, लेकिन करण कारक में 'से' का

मतलब 'के द्वारा' (साधन) होता है, जबकि अपादान कारक में 'से' का मतलब 'अलग होना' या 'स्रोत' होता है, जैसे— चाकू से काटना (करण कारक) और 'पेड़ से गिरना' (अपादान कारक)।

(ख) 1. (iii) अपादान कारक
2. (iii) करण कारक
3. (ii) अधिकरण कारक
4. (i) संबोधन कारक

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. की 2. से
3. के साथ 4. पर
5. को / का

➡ सोच-समझ से

1. हिंदी व्याकरण में कारक का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह संज्ञा / सर्वनाम का क्रिया से संबंध जोड़कर वाक्य को स्पष्ट, सुगठित और अर्थपूर्ण बनाते हैं, जिससे पता चलता है कि कौन, किससे, किसके लिए, कहाँ, कब और कैसे क्रिया कर रहा है; कारक चिन्ह् (परसर्ग) जैसे— 'ने', 'को', 'से', 'के लिए', 'में', 'पर', आदि वाक्य में कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण और संबोधन जैसे विभिन्न भूमिकाओं को दर्शाते हैं, जिससे वाक्य का सही अर्थ स्पष्ट होता है और भाषा में सटीकता आती है।

2.

को	चिड़ियाघर से शेर को निकालना पड़ा।	(कर्म कारक)
	यह किताब मैं अरुण को दूँगा।	(संप्रदान कारक)
से	मुझे छुरी-काँटे से खाना पसंद नहीं है।	(करण कारक)
	पेड़ से एक पत्ता अभी-अभी टूटकर गिरा है।	(अपादान कारक)

➡ कुछ करके देखिए

राघव— व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन।
को— कर्म कारक।
कलम— जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन।
रेखा— व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन।
का— संबंध कारक।
आँखों— जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, बहुवचन।
से— अपादान कारक।
आग— जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन।
से— करण कारक।
पूरब— व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन।
से— अपादान कारक।

✤✤

8 सर्वनाम

➡ बातों-बातों में

1. सर्वनाम शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है।
2. सर्वनाम के भेद इस प्रकार हैं —
   1. पुरुषवाचक सर्वनाम,
   2. निश्चयवाचक सर्वनाम,
   3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम,
   4. प्रश्नवाचक सर्वनाम,
   5. संबंधवाचक सर्वनाम,
   6. निजवाचक सर्वनाम।
3. वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त अन्य तीसरे व्यक्ति के लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग होता है, उन्हें अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

4. स्वयं के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

➡ लिखित में

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे— आप, उनकी, इनके, ये तथा हमारे आदि।
2. (i) पुरुषवाचक सर्वनाम— उदाहरण— आप तो जानते हैं वह मेरा कितना अच्छा मित्र है।
   (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम— उदाहरण— यह पुस्तक मेरी है।
   (iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम— उदाहरण— दरवाजे पर कोई आया है।
   (iv) प्रश्नवाचक सर्वनाम— उदाहरण— आप मेला कब चलेंगी।
   (v) संबंधवाचक सर्वनाम— उदाहरण— यह वही आदमी है जिसने कल कुश्ती जीती थी।
   (vi) निजवाचक सर्वनाम— उदाहरण— मैं अपने-आप चित्र बनाऊँगा।
3. (i) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम— उदाहरण— हम आज दिल्ली जाएँगे।
   (ii) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम— उदाहरण— आप कहाँ जा रहे हैं?
   (iii) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम— उदाहरण— उसे जलेबी खाना पसंद है।
4. निश्चयवाचक सर्वनाम (यह, वह, ये, वे) किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं; जैसे यह मेरी किताब है, जबकि अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कोई, कुछ) किसी अनिश्चित या सामान्य व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं; जैसे— कोई आ रहा है या कुछ कमी है, और यही इन दोनों के बीच अंतर है।
5. जो सर्वनाम शब्द प्रधान (मुख्य) उपवाक्य में आए सर्वनाम शब्दों से संबंध स्थापित करके आश्रित उपवाक्य में प्रयोग होते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे— जो परिश्रम करेगा **वह** सफल होगा।

(ख) 1. (ii) संबंधवाचक सर्वनाम
2. (iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
3. (i) प्रश्नवाचक सर्वनाम
4. (ii) निजवाचक सर्वनाम

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. स्वयं 2. जैसा/वैसा 3. कुछ 4. मेरा

(ङ) 1. उसने (अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम)
2. जिसे और वह (संबंधवाचक सर्वनाम)
3. आपका (मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम)
4. किसका (प्रश्नवाचक सर्वनाम)
5. कोई (अनिश्चयवाचक सर्वनाम)

➡ सोच-समझ से

* 'आप' शब्द का प्रयोग जब श्रोता (मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम) के लिए आदर देने के लिए हो, तब यह आदरसूचक होता है; जैसे— आप कहाँ जा रहे हैं? और जब यही शब्द वक्ता स्वयं (निजवाचक सर्वनाम) के लिए प्रयोग करे, तब यह निजवाचक सर्वनाम कहलाता है; जैसे— मैं आप ही चला जाऊँगा। मुख्य अंतर संदर्भ और अर्थ में है— एक में सम्मान, दूसरे में स्वयं के लिए प्रयोग।
* 'यह' शब्द के एकवचन और बहुवचन रूप के सभी कारकों (विभक्तियों) के साथ रूप इस प्रकार हैं— एकवचन में 'यह' और बहुवचन में 'ये' रहता है, लेकिन कारक लगने पर इनमें बदलाव आता है; जैसे— इसका, इसकी, इसको, इससे, इसका, इसमें; बहुवचन में इनका, इनकी, इनको, इनसे, इनका, इनमें। यह सर्वनाम है और लिंग-वचन के अनुसार बदलता है, जिसका बहुवचन 'ये' होता है।

➡ कुछ करके देखिए

1. पुरुषवाचक सर्वनाम—
   (i) मैं पढ़ रहा हूँ। (ii) तुम कहाँ जा रहे हो? (iii) वह अच्छा लड़का है। (iv) हम कल खेलेंगे।
2. निश्चयवाचक सर्वनाम—
   (i) यह मेरा पेन है। (ii) वह तुम्हारी किताब है। (iii) ये मेरे दोस्त हैं। (iv) वे स्कूल जा रहे हैं।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम—
(i) कोई आया था। (ii) कुछ खा लो। (iii) कोई भी जा सकता है। (iv) सब लोग खुश थे।
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम—
(i) दरवाजे पर कौन है? (ii) आप क्या खा रहे हैं? (iii) आप किसे बुला रहे हैं? (iv) किसका पेन है?
5. संबंधवाचक सर्वनाम—
(i) जो करेगा सो भरेगा। (ii) जिसकी लाठी, उसकी भैंस। (iii) जैसा बोओगे, वैसा काटोगे। (iv) जो पढ़ता है, वही सफल होता है।
6. निजवाचक सर्वनाम—
(i) मैं अपना काम खुद करता हूँ। (ii) वह अपने आप ही नहा लेता है। (iii) तुम खुद ही समझ जाओ। (iv) हमें अपने आप काम करना चाहिए।

❖❖

9 विशेषण

➡ बातों-बातों में

1. विशेषण शब्द संज्ञा शब्दों की विशेषता बताते हैं।
2. जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं।
3. संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार का होता है—
(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण,
(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण।
4. विशेषणों की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं।

➡ लिखित में

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं; जैसे— हरा-भरा, भयानक, सफेद, रंग-बिरंगी।
2. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द **विशेषण** कहलाते हैं, जबकि जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे **विशेष्य** कहते हैं।
3. विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं; जैसे—
1. महात्मा **अत्यंत** दयालु थे।
2. वर्षा **बहुत** परिश्रमी है।
4. संख्यावाचक विशेषण गणनीय वस्तुओं की संख्या या क्रम बताते हैं; जैसे— दो किताबें, पहला स्थान, जबकि परिमाणवाचक विशेषण अगणनीय वस्तुओं की मात्रा या नाप-तौल बताते हैं; जैसे— थोड़ा पानी, कुछ चावल। मुख्य अंतर यह है कि संख्यावाचक विशेषण 'कितने' का जवाब देते हैं और गणनीय संज्ञाओं के साथ आते हैं, वहीं परिमाणवाचक 'कितना' का जवाब देते हैं और अगणनीय संज्ञाओं के साथ आते हैं।
5. सर्वनाम शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होते हैं; जैसे— वह घर जाएगा, जबकि सार्वनामिक विशेषण संज्ञा से पहले लगकर उसकी विशेषता बताते हैं; जैसे— वह लड़का घर जाएगा।
6. विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं —
(i) मूलावस्था— जैसे— फूल सुंदर है।
(ii) उत्तरावस्था— जैसे— गुलाब गेंदा से सुंदरतर है।
(iii) उत्तमावस्था— जैसे— गुलाब सभी फूलों में सुंदरतम है।

(ख) 1. (ii) निश्चित संख्यावाचक विशेषण
2. (ii) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
3. (iii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
4. (iv) गुणवाचक

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. सांस्कृतिक 2. मरियल 3. स्वर्णिम 4. सहायक 5. सपेरा 6. जोशीला।

(ङ) 1. **यह** सार्वनामिक विशेषण
2. **दो किलो** परिमाणवाचक विशेषण
3. **मीठी** गुणवाचक विशेषण
4. **कुछ** अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
5. **प्रथम** संख्यावाचक विशेषण

(च)

पुष्प	पुष्पित	मानव	मानवीय
हिंसा	हिंसक	रोक	रुद्ध
मैं	मेरा	तुम	तेरा
हँसना	हँसमुख	बेचना	बिकाऊ
टिकना	टिकाऊ	आगे	अगला
बाहर	बाहरी	भीतर	भीतरी
आलस्य	आलसी	प्रकाश	प्रकाशित

➡ सोच-समझ से

❋ व्याकरण में विशेषणों की उपयोगिता यह है कि वे संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताकर भाषा को सजीव, विस्तृत और प्रभावशाली बनाते हैं, जिससे हमें किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के गुण, दोष, संख्या, मात्रा, रंग, आकार आदि की सटीक जानकारी मिलती है। इससे वाक्य अधिक स्पष्ट, रोचक और जीवंत हो जाते हैं। ये भाषा में विवरण जोड़ते हैं और संचार को अधिक सटीक बनाते हैं।

➡ कुछ करके देखिए

1. सर्दी—कड़ाके की, ठंडी, बर्फीली, धुंधली।
2. वृक्ष—विशाल, घना, छायादार, ऊँचा।
3. उद्यान—सुंदर, हरा-भरा, विशाल, शांत।
4. घर—बड़ा, नया, आरामदायक, पुराना।

✤✤

10 क्रिया

➡ बातों-बातों में

1. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं- 1. अकर्मक क्रिया और 2. सकर्मक क्रिया।
2. जिन वाक्यों में कर्म की संख्या एक होती है, उन्हें एककर्मक क्रिया कहते हैं।
3. प्रयोग के आधार पर क्रिया के पाँच प्रकार होते हैं— 1. सामान्य क्रिया, 2. संयुक्त क्रिया, 3. नामधातु क्रिया, 4. प्रेरणार्थक क्रिया, 5. पूर्वकालिक।
4. नामधातु क्रिया के दो उदाहरण—
1. आकाश में तारे **टिमटिमा रहे हैं**।
2. कोई दरवाजा **खटखटा रहा है**।

➡ लिखित में

(क) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उन्हें **क्रिया** कहते हैं; जैसे— पढ़ + ना = पढ़ना, लिख + ना = लिखना, बैठ + ना = बैठना।
2. जिन वाक्यों में कर्म की अपेक्षा की जाती है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं। इन वाक्यों में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है। जैसे— दादी ने **कहानी सुनाई**। कोयल **गीत गाती है**।
3. जिन वाक्यों में कर्म की संख्या एक होती है, उन्हें एककर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे— श्याम **पत्र** पढ़ रहा है। जबकि जिन वाक्यों में दो कर्म होते हैं, **द्विकर्मक** क्रिया कहते हैं; जैसे— लहन ने **भाई** को **राखी** बाँधी।
4. जिस वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य में सम्मिलित होकर कार्य की प्रेरणा देता है, वह प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है; जैसे— अध्यापिका ने छात्रों को पढ़ाया। लेकिन जिस वाक्य में कर्ता सिर्फ दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरणा देता है, वह द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है; जैसे— महात्मा जी लोगों को भोजन **करवाते हैं**।
5. वह क्रिया जो मुख्य क्रिया से पहले आती है, **पूर्वकालिक क्रिया** कहलाती है; जैसे— रवीना आकर सो गई। मैं नहाकर बाजार जाऊँगा।

(ख) 1. (i) अकर्मक क्रिया
2. (i) एककर्मक क्रिया
3. (iv) पूर्वकालिक क्रिया
4. (iii) नामधातु क्रिया

(ग) 1. (✓) 2. (×) 3. (✓) 4. (×)

(घ) 1. पहाड़ से नदी अपना रास्ता स्वयं बनाती है।
2. मुझे मेरी माँ ने पढ़ना **सिखाया**।
3. मुझे अभी गणित भी **पढ़ना** है।
4. माँ ने नहाकर पूजा भी **कर** ली।
5. कार डिवाइडर से **टकरा** गई।
6. पहाड़ का एक हिस्सा **गिरने** ही वाला है।
7. वह आया और **आकर** सो गया।

(ङ) 1. तुरंत, 2. अभी-अभी, 3. खेलते-खेलते, 4. लेटते, 5. गिरते-गिरते, 6. आए, 7. रुक-रुक

➡ सोच-समझ से

1. दुकान पर सजी मिठाइयाँ देखकर बच्चे के मुँह में पानी आ गया। (कर्म - मिठाइयाँ)
2. बत्ती हरी होते ही गाड़ियाँ चल पड़ीं। (कर्म - हरी बत्ती)
3. जैसे ही घर पहुँचा, वैसे ही आँधी आ गई। (कर्म - घर पहुँचना)
4. लाल कपड़ा देखते ही सांड भड़ककर रामू के पीछे भागने लगा। (कर्म - लाल कपड़ा)
5. जो परिश्रमी होते हैं, वे काम से नहीं डरते। (कर्म - काम)

➡ कुछ करके देखिए

❋ छात्र किसी समाचार-पत्र के संपादकीय लेख को पढ़कर स्वयं करें।

❋ 1. सुबह मैं सबसे पहले अलार्म बंद करके बिस्तर से उठता हूँ। 2. फिर मैं उठकर एक गिलास गुनगुना पानी पीता हूँ। 3. उसके बाद मैं ब्रश करके और नहाकर फ्रेश होता हूँ। 4. नाश्ते के बाद मैं अपना स्कूल बैग लगाकर और किताबें रखकर स्कूल के लिए निकलता हूँ। 5. खेलकर घर आने के बाद, मैं अपना गृहकार्य पूरा करता हूँ। 6. खाना खाकर मैं थोड़ी देर टीवी देखता हूँ।

✤✤

11 काल

➡ बातों-बातों में

1. व्याकरण में काल तीन माने जाते हैं— वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यत् काल।
2. भूतकाल के छह भेद हैं— 1. सामान्य भूतकाल, 2. आसन्न भूतकाल, 3. पूर्ण भूतकाल, 4. अपूर्ण भूतकाल, 5. संदिग्ध भूतकाल, 6. हेतुहेतुमद् भूतकाल।
3. संभाव्य भविष्य काल का उदाहरण— हो सकता है वे मैच जीत जाएँ।
4. आसन्न भूतकाल का उदाहरण— मोहन बाजार जा चुका है।

➡ लिखित में

(क)

1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं। जैसे— वह खाना खा **रहा है**। (वर्तमान काल)
2. जिस काल से क्रिया के भूतकाल में सामान्य रूप से होने का पता चलता है, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं; जैसे— वह दिल्ली नहीं गया। लेकिन क्रिया के जिस रूप से कार्य के हाल ही में समाप्त होने का बोध हो, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं; जैसे— रमा ने पुस्तक को पढ़ लिया है।
3. क्रिया के जिस रूप से उसके सामान्य रूप से वर्तमान समय में होने का पता चलता है, उसे **सामान्य वर्तमान काल** कहते हैं। जैसे— मोहन खाता है। लेकिन क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य के वर्तमान समय में होने में संदेह है, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं; जैसे— बच्चे स्कूल जाते होंगे।

4. क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है कि वह आने वाले समय में होगी, उसे भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे— कल पिताजी आएँगे।

(ख) 1. (i) वर्तमान काल
2. (ii) संदिग्ध भूतकाल
3. (iii) सामान्य वर्तमान काल

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. अपूर्ण वर्तमान काल
2. संभाव्य वर्तमान काल
3. हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल
4. संभाव्य भविष्यत् काल
5. अपूर्ण भूतकाल

(ङ)
1. बच्चे फुटबॉल खेल रहे होंगे। (संदिग्ध वर्तमान काल)
2. पानी **बरसता** तो फसल अच्छी **होती**। (हेतुहेतुमद् भूतकाल)
3. लगता है शीला बाजार जाएगी। (संभाव्य भविष्यत् काल)
4. जय व्यायाम **करता है**। (अपूर्ण वर्तमान काल)

➡ सोच-समझ से

❋ एक दिन खेत पर जाकर देखा कि फूलों से भरा हुआ खेत मन को मोह रहा था। सरसों में पानी की आवश्यकता थी, जिसे पूरा करने के लिए एक रात खेत में गुजारनी पड़ी और पानी लगाया। अगर ऐसा नहीं करते तो फसल अच्छी नहीं होती, लेकिन मैं ठंड से बीमार हो गया।

➡ कुछ करके देखिए

1. भूतकाल— केशव ने कल रामायण **पढ़ी थी**।
(i) सामान्य भूतकाल—दिव्या ने पुस्तक **पढ़ी**।
(ii) आसन्न भूतकाल— मोहन बाजार जा **चुका है**।
(iii) पूर्ण भूतकाल— रेखा स्कूल **गई थी**।
(iv) अपूर्ण भूतकाल— मोहन खाना **खा रहा था**।
(v) संदिग्ध भूतकाल— अब मुख्य अतिथि **आ गए होंगे**।
(vi) हेतुहेतुमद् भूतकाल— तुम **आ जाते** तो माँ **खुश हो जाती**।
2. वर्तमान काल— सुरेश कानपुर जा रहा है।
(i) सामान्य वर्तमान काल— राम **पढ़ता है**।
(ii) अपूर्ण वर्तमान काल— रमन **पढ़ रहा है**।
(iii) संदिग्ध वर्तमान काल— बच्चे स्कूल **जाते होंगे**।
3. भविष्यत् काल— कल बुआ जी **आएँगी**।
(i) सामान्य भविष्यत् काल— दादाजी बाजार **जाएँगे**।
(ii) संभाव्य भविष्यत् काल— हो सकता है वे मैच **जीत जाएँ**।
(iii) हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल— यदि टिकट **मिल गई** तो सर्कस देखने **जाएँगे**।

✤✤

12 वाच्य

➡ बातों-बातों में

1. वाच्य तीन प्रकार के होते हैं—
1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य और
3. भाववाच्य।
2. कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है।
3. कर्तृवाच्य का प्रयोग अकर्मक तथा सकर्मक दोनों क्रियाओं में किया जाता है।
4. भाववाच्य में कर्म नहीं होता।

➡ लिखित में

(क) 1. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया के व्यापार का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है, उसे **वाच्य** कहते हैं; जैसे— **माँ** खाना बना रही है।
2. वाच्य **तीन** प्रकार के होते हैं—
(i) कर्तृवाच्य — रामू पढ़ता है।
(ii) कर्मवाच्य— मोती द्वारा मिठाई खाई जाती है।

(iii) भाववाच्य— मुझसे चला नहीं जाता।

3. जिन वाक्यों में कर्ता प्रधान होता है, उन्हें कर्तृवाच्य कहते हैं। इन वाक्यों में क्रिया का सीधा संबंध कर्ता के साथ होता है। जैसे— रमन दौड़ता है। लेकिन जिन वाक्यों में कर्म प्रधान होता है, उन्हें **कर्मवाच्य** कहते हैं। इन वाक्यों में क्रिया का संबंध कर्म से होता है; जैसे— माँ के द्वारा कहानी सुनाई गई।
4. जिन वाक्यों में भाव प्रधान होता है, उन्हें **भाववाच्य** कहते हैं। जैसे— चलो, दौड़ा जाए।

(ख) 1. (ii) कर्मवाच्य 2. (iii) भाववाच्य
3. (iii) निधि द्वारा गाना नहीं गाया जाता।
4. (iv) बच्चे पतंग उड़ा रहे हैं।

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (×) 4. (×)

(घ) 1. भाववाच्य, 2. कर्तृवाच्य,
3. भाववाच्य, 4. कर्मवाच्य,
5. कर्तृवाच्य

(ङ) 1. मोहन द्वारा चित्र बनाया जाता है।
2. फूल माली द्वारा तोड़े गए।
3. बंदर द्वारा अमरूद खाया जा रहा है।
4. मयंक द्वारा बैडमिंटन खेला जा रहा है।
5. हम सबके द्वारा गाना गाया जा रहा है।

(च) 1. सब बच्चों द्वारा खेला जा रहा है।
2. मुझसे पढ़ा नहीं जाता।
3. बंशी से कक्षा में शांत रहा जाता है।
4. रवि से कार चलाई जाती है।
5. बूढ़ी औरत से चला नहीं जाता।

➡ सोच-समझ से

* **वाक्य** एक पूर्ण विचार या अर्थ व्यक्त करने वाले शब्दों का समूह है, जबकि वाच्य क्रिया का वह रूप है जो बताता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है, अर्थात् क्रिया किसके अनुसार बदल रही है। एक वाक्य एक पूरी संरचना है; जैसे— राम खाना खा रहा है, जबकि वाच्य उस वाक्य के अंदर क्रिया का कोण (जैसे— 'राम' पर जोर या 'खाना' पर जोर) बताता है।
* भाववाच्य वाले वाक्यों का प्रयोग कर्ता द्वारा स्वयं अपने लिए किया जाता है।
1. मुझसे अब बैठा नहीं जाता। 2. चलो, अब सोया जाए। 3. बूढ़ी माँ से चला नहीं जाता। 4. अब घूमा जाए। 5. बच्चों से खेला नहीं जाता।

➡ कुछ करके देखिए

कर्तृवाच्य के उदाहरण

1. राम पत्र लिखता है। 2. बच्चा खेल रहा है। 3. पक्षी गाते हैं। 4. शिक्षक पढ़ाते हैं। 5. सूरज चमक रहा है।

कर्मवाच्य के उदाहरण

1. राम द्वारा पत्र लिखा गया। 2. लड़कियों द्वारा बाजार जाया जा रहा है। 3. चोर पकड़ा गया। 4. गाना गाया गया। 5. फसल काट ली गई।

भाववाच्य के उदाहरण

1. मुझसे चला नहीं जाता। 2. राम से दौड़ा नहीं जाता। 3. धूप में चला नहीं जाता। 4. उससे पढ़ा नहीं जाता। 5. उसने बहुत खाया।

✤✤

13 अव्यय / अविकारी शब्द

➡ बातों-बातों में

1. अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं—
(i) क्रियाविशेषण, (ii) संबंधबोधक, (iii) समुच्चयबोधक, (iv) विस्मयादिबोधक, (v) निपात।
2. क्रियाविशेषण शब्दों के भेद—
(i) कालवाचक क्रियाविशेषण- मैं **कल** कानपुर जाऊँगा। (ii) स्थानवाचक क्रियाविशेषण- वह **इधर-उधर** भटकता रहा। (iii) रीतिवाचक

क्रियाविशेषण – मोहन **अचानक** गिर पड़ा।
(iv) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण – वह थोड़ा खाता है।

3. संबंधबोधक अव्यय के **चौदह** भेद हैं।
4. जो अव्यय शब्द दो शब्दों या दो वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, उन्हें **समुच्चयबोधक** कहते हैं।
5. निपात का प्रयोग करते हुए उदाहरण— पिताजी! मैं **भी** बाजार जाऊँगा।

➡ लिखित में

(क) 1. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को **क्रियाविशेषण** शब्द कहते हैं; जैसे— शेर पिंजरे **के अंदर** था।

2. (i) उसके पास **पर्याप्त** धन है।
(ii) वह **ज्यादा** खाता है।

3. जो अव्यय शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के पश्चात आकर वाक्य के अन्य शब्दों से उसका संबंध स्थापित करते हैं, **संबंधबोधक** कहलाते हैं; जैसे— तालाब **के किनारे** एक सुंदर बगीचा है। जबकि क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को **क्रियाविशेषण** कहते हैं; जैसे— दादा जी अखबार प्रतिदिन पढ़ते हैं।

4. जो अव्यय शब्द दो शब्दों या दो वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, उन्हें **समुच्चयबोधक** कहते हैं; जैसे— सूरज निकला **और** पक्षी उड़ने लगे।

5. (i) जीता रह! ईश्वर तेरा भला करे।
(ii) चिरंजीवी भव! सदा उन्नति करो।

6. वे अव्यय शब्द जो किसी पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष बल प्रदान करते हैं, निपात कहलाते हैं; जैसे— उसके साथ रहीम **भी** आया था।

(ख) 1. (i) स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय
2. (i) संबंधबोधक अव्यय
3. (iii) समुच्चयबोधक अव्यय
4. (iii) निपात अव्यय

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) क्रियाविशेषण	**भेद**
1. दिनभर	कालवाचक क्रियाविशेषण
2. धीरे-धीरे	रीतिवाचक क्रियाविशेषण
3. आज	कालवाचक क्रियाविशेषण
4. यहाँ से वहाँ	स्थानवाचक क्रियाविशेषण
5. परसों	कालवाचक क्रियाविशेषण

(ङ) 1. के भीतर, 2. के ऊपर,
3. के सामने, 4. के बाहर,
5. के बिना

(च) 1. परंतु, 2. मानो, 3. कि, 4. और, 5. या

➡ सोच-समझ से

*1. यदि तुम मेहनत करते, तो अच्छे अंक लाते।
2. जब बारिश होगी तो अच्छा मौसम हो जाएगा।
3. वह जल्दी उठता है तो समय पर पहुँच जाता है।
4. अगर मैं वहाँ जाता, तो यह सब न होता।

➡ कुछ करके देखिए

वाक्य	प्रकार
* 1. **हाँ,** मैं यह काम करूँगा। 2. **जी हाँ,** मुझे यह मंजूर है।	स्वीकारबोधक वाक्य
1. **हाँ, हाँ!** मैं कल जरूर आऊँगा। 2. **शाबाश!** तुमने बहुत अच्छा काम किया।	अनुमोदनबोधक वाक्य
1. आपका दिन शुभ हो**!** 2. सदा सुखी रहो**!**	आशीर्वादबोधक वाक्य
1. **वाह!** यह कितना सुंदर चित्र है। 2. **अरे!** तुम यहाँ कैसे?	विस्मयादिबोधक वाक्य
1. वह **तो** घर चला गया। 2. तुमने **तो** हद कर दी।	'तो' निपात

1. तुम्हें आज रात रुकना **ही** पड़ेगा।
2. यह काम उसने स्वयं **ही** किया।] 'ही' निपात

1. वह सुबह **तक** सोया रहा।
2. उसने माँ को बताया **तक** नहीं।] 'तक' निपात

1. रात **भर** बारिश होती रही।
2. उसने पानी **भर** लिया।] 'भर' निपात

14 वाक्य-विचार

➡ बातों-बातों में

1. वाक्य के दो अंग **उद्देश्य** और **विधेय** होते हैं।
2. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं - 1. सरल/साधारण वाक्य, 2. संयुक्त वाक्य, 3. मिश्र/मिश्रित वाक्य।
3. अर्थ के आधार पर वाक्य भेद के आठ भेद हैं-
   1. विधानवाचक, 2. निषेधवाचक,
   3. प्रश्नवाचक, 4. आज्ञावाचक,
   5. संदेहवाचक, 6. संकेतवाचक,
   7. इच्छावाचक, 8. विस्मयादिबोधक।
4. 'यहाँ बैठ जाओ।' (आज्ञावाचक वाक्य)

➡ लिखित में

1. शब्दों का सार्थक व व्यवस्थित समूह जिससे किसी भाव को प्रकट किया जा सके, **वाक्य** कहलाता है; जैसे- तालाब में सुंदर फूल खिले हैं।
2. **अर्थ के आधार पर वाक्य—**
   (i) विधानवाचक वाक्य— फूल खिले हैं।
   (ii) निषेधवाचक वाक्य— फूल न तोड़ें।
   (iii) प्रश्नवाचक वाक्य— खाना किसने छोड़ दिया?
   (iv) आज्ञावाचक वाक्य— मैं अब चलूँ क्या?
   (v) संकेतवाचक वाक्य— बारिश हुई तो किसान खुश हो जाएँगे।
   (vi) संदेहवाचक वाक्य— मुझे आने में देर हो सकती है।
   (vii) इच्छावाचक वाक्य— उम्मीद है कि आप कुशल होंगे।
   (viii) विस्मयादिबोधक वाक्य— वाह! क्या सुंदर दृश्य है।
3. जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय हो, उसे **सरल वाक्य** कहते हैं; जैसे— आम पेड़ से गिर पड़ा। लेकिन जिस वाक्य में दो समान वाक्य तथा उपवाक्य किसी योजक चिन्ह् द्वारा जुड़े हों, उसे **संयुक्त वाक्य** कहते हैं; जैसे— सोहन आया और तुरंत चला गया।
4. जिन वाक्यों से विस्मय के भाव जैसे— प्रेम, हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि की अभिव्यक्ति हो, उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं; जैसे—वाह! क्या फूल खिले हैं।
5. अक्सर वाक्य रचना करते समय लिंग, वचन, क्रिया या पदक्रम की जानकारी न होने के कारण अशुद्धियाँ हो जाती हैं। जैसे—
   1. अशुद्ध वाक्य— बनाया माँ ने सूजी का हलवा।
   शुद्ध वाक्य— माँ ने सूजी का हलवा बनाया।
   2. अशुद्ध वाक्य— हम स्कूल जा रही हूँ।
   शुद्ध वाक्य— हम स्कूल जा रहे हैं।

(ख) 1. (iii) वे बगीचे गए क्योंकि उन्हें घूमना था।
2. (iii) आज रमा का जन्मदिन है इसलिए घर में पार्टी है।
3. (i) घर में कौन आया था?
4. (i) विकास

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✗) 5. (✓)

(घ) 1. इच्छावाचक वाक्य
2. विस्मयादिबोधक वाक्य

3. संदेहवाचक वाक्य
4. संकेतवाचक वाक्य
5. आज्ञावाचक वाक्य

(ङ)

	उद्देश्य	विधेय
1.	बच्चे	जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं।
2.	दूधवाला	आज थोड़ी देर से आया।
3.	अखबार वाला	पैसे ले गया पर अखबार नहीं डाल गया।
4.	बच्चों के	छत पर खेलते गिरने का डर है।
5.	आज हवा	बड़ी जोर से चल रही है।
6.	मेरे पापा	अध्यापक हैं।

(च) 1. क्या बाहर रिक्शा खड़ा है?
2. क्या बस निकलने में देर हो गई है?
3. काश पहाड़ों में बर्फ गिरती!
4. मैना रोती हुई बाहर आ रही है।
5. किताब पढ़कर उसे अलमारी में रख दो।
6. उठो और नहा लो।

➡ सोच-समझ से

❋ छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

➡ कुछ करके देखिए

❋ छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

✤✤

15 विराम चिह्न

➡ बातों-बातों में

1. विराम का अर्थ है— रुकना।
2. भाषा में विराम न लिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है।
3. तुलसीदास जी की रचना है- 'श्रीरामचरितमानस'।

➡ लिखित में

(क) 1. भाषा को बोलते या लिखते समय विशेष स्थानों पर रुकने के संकेतों को दर्शाने वाले चिन्हों को विराम चिन्ह् कहते हैं। जैसे-
1. रोको, मत जाने दो।
2. रोको मत, जाने दो।

2. (i) वाक्यों में जब समान या विपरीत शब्द एक साथ आते हैं, तो उन शब्दों के बीच (-) योजक चिन्ह् लगाया जाता है; जैसे- माता-पिता, कभी-कभी, चाँद-सा।
(ii) वाक्य पूरा होने या किसी के कथन के पश्चात् जब उससे संबंधित उदाहरणों की ओर संकेत या निर्देश किया जाता है, तब निर्देशक चिह्न (—) लगाया जाता है। जैसे— हमारे देश की प्रमुख नदियाँ हैं— गंगा, यमुना, कावेरी, गोदावरी आदि।

3. जब लिखते या बोलते समय अर्ध विराम से कम समय के लिए रुकना पड़ता है, तब अल्प विराम लगाते हैं। एक समान शब्दों को अलग करने के लिए भी अल्प विराम के चिन्ह् (,) का प्रयोग करते हैं। जैसे— तुम रुको, मैं अभी आया। जबकि अर्ध विराम का चिन्ह् (;) दो उपवाक्यों को अलग करने के लिए लगाया जाता है। अद्र्ध विराम में अल्प विराम से दुगुना समय लगता है; जैसे— बच्चा रोता रहा; माँ सोती रही।

(ख) 1. (iii) । 2. (ii) /
3. (i) निर्देशक चिन्ह् 4. (iv) विस्मयवाचक

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. निर्देशक चिन्ह् 2. पूर्ण विराम चिन्ह् 3. दोहरा उद्धरण चिन्ह् 4. अपूर्ण विराम चिन्ह् 5. त्रुटिपद चिन्ह्

(ङ) 1. आज हम घर वापस क्यों नहीं चल सकते?
2. सुभाषचंद्र बोस ने कहा, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"
3. अरे! आज ही निकल पड़े तुम?
4. बच्चा बोला, "आज हम आप बैडमिंटन खेलेंगे।"
5. तुम एल. एल. बी. क्यों नहीं कर लेते?

➡ **सोच-समझ से**

1. महात्मा गाँधी जी ने कहा, ''सत्य ही ईश्वर है।''
2. विवेकानंद ने कहा, ''उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।''
3. बाल गंगाधर तिलक का नारा था, ''स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, और हम इसे लेकर रहेंगे।''
4. चाणक्य ने कहा, ''ज्ञान ही सबसे बड़ा धन है।''

➡ **कुछ करके देखिए**

बरसात की एक अँधेरी रात थी। एक आदमी साधारण कपड़े पहने नगर के तंग रास्तों में से चौकन्ना होकर आगे बढ़ रहा था। घोड़े पर सवार वह जैसे ही एक गली में मुड़ा कि पीछे से ये शब्द उसके कानों में पड़े, ''रुक जा।'' वह बिना कुछ सुने-रुके अपनी चाल चलता रहा। आगे पलभर में दस-बारह डाकुओं ने उसे घेर लिया। मोटा-तगड़ा उनका सरदार गरजकर बोला, ''अबे, सुनाई नहीं देता।'' उतर घोड़े से। फिर दो डाकुओं ने उसे खींचकर नीचे उतार दिया, तभी बिजली चमकी तो उसका सफेद रंग का सुंदर घोड़ा देखकर बोला, ''मालदार लगता है।''

✤✤

16 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

➡ **बातों-बातों में**

1. मुहावरे अपना सीधा अर्थ न देकर एक विशेष अर्थ प्रकट करते हैं जिससे भाषा आकर्षक और प्रभावशाली बन जाती है।
2. अपने ऊपर नियंत्रण खो देना।
3. लोक या आमजन की उक्तियाँ लोगों के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गई।
4. लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप से होता है।

➡ **लिखित में**

(क) 1. जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें **मुहावरा** कहते हैं। जैसे— पसीना बहाने का अर्थ है— कड़ी मेहनत करना।

2. लोक या आम जन की उक्तियाँ अर्थात् आम जनता के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गई उक्तियाँ ही लोकोक्ति कहलाती हैं। लोकोक्तियाँ अपने आप में पूर्ण वाक्य होती हैं। इनका प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप से होता है।

3. मुहावरे और लोकोक्ति में मुख्य अंतर यह है कि मुहावरा एक वाक्यांश (वाक्य का अंश) होता है जो भाषा को सजाता है और बदल सकता है, जबकि लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य होती है जो लोक अनुभव पर आधारित होती है और सिखाती है, जिसमें बदलाव नहीं होता और यह स्वतंत्र रूप से प्रयोग होती है।

(ख) 1. (i) आराम करना। 2. (ii) भाग जाना।
3. (i) काला अक्षर भैंस बराबर
4. (ii) बिना जानकारी के जानने का दिखावा करना
5. (iii) अंधों में काना राजा

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. नौ दो ग्यारह 2. मुँह में पानी आ गया। 3. टेढ़ी खीर है। 4. अंग-अंग खिल उठा। 5. आँखें मूँद

(ङ) 1. (ii), 2. (i), 3. (v), 4. (iii), 5. (iv)

➡ **सोच-समझ से**

1. आँखें बिछाना (अति उत्साह से स्वागत करना)— विवेकानंद के अमेरिका से लौटने पर देशवासियों ने उनके स्वागत में आँखें बिछा दीं।

2. इस कान से सुनना उस कान से निकालना (ध्यान न देने की स्थिति)– कार्यालय के लिपिकों ने अधिकारी की बात को इस कान से सुना और उस कान से निकाल दिया।
3. एड़ी-चोटी का पसीना एक करना (बहुत मेहनत करना)– निर्धन व्यक्ति परिवार की उन्नति के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रहे हैं।
4. एक आँख न भाना (बिलकुल अच्छा न लगना)– पिताजी को बेईमान लोग एक आँख नहीं भाते हैं।
5. कलेजे पर साँप लोटना (मन में कष्ट होना)– तुम्हारी सफलता के विषय में सुनकर तुम्हारे शत्रुओं के कलेजे पर साँप लोट रहे हैं।
6. कान पर जूँ न रेंगना (परवाह न करना)– मैं नौकर से रोज जल्दी आने को कहता हूँ, पर उसके कान पर जूँ नहीं रेंगती है।
7. कान में तेल डालना (किसी की बात न सुनना)– मैंने तुमसे कितना कहा कि परिश्रम करो, किंतु तुमने कान में तेल डाल रखा था।
8. कमर कसना (दृढ़ निश्चय करना)– इस बार लता ने परीक्षा में प्रथम श्रेणी लाने के लिए अपनी कमर कस ली है।
9. गले पड़ना (अनिच्छुक के साथ मित्रता की कोशिश करना)– मैं उससे जरा प्यार से क्या बोला, वह तो मेरे गले ही पड़ गया।
10. गले का हार होना (अत्यधिक प्रिय होना)– तुम मधुर व्यवहार से सभी के गले का हार बन सकते हो।
11. जमीन पर पैर न पड़ना (बहुत इतराना या अभिमान करना)– सुरेश ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण क्या कर ली, अब उसके जमीन पर पैर ही नहीं पड़ते।
12. दिल छोटा करना (धैर्य खोना)– दिल छोटा मत करो, ऐसी आपत्तियाँ तो आती ही रहती हैं।

*** परीक्षा की तैयारी पर दो विद्यार्थियों के बीच संवाद**

राहुल (उदास होकर)– अरे मोहन, कैसा है?

मोहन– मैं तो ठीक हूँ, राहुल। पर तुम कुछ परेशान लग रहे हो, क्या बात है?

राहुल– क्या बताऊँ यार, परीक्षाएँ सिर पर हैं और मेरी तो आँखों के आगे अँधेरा छा रहा है (बहुत घबराहट होना)।

मोहन– घबरा क्यों रहा है?

राहुल– आसमान के तारे कैसे तोड़े जाएँ।

➡ कुछ करके देखिए

मुहावरों का अर्थ और वाक्य प्रयोग

1. दाल में काला होना (संदेहपूर्ण स्थिति)– उसके पास धन नहीं है, किंतु वह बहुत बड़ी योजना बनाकर काम कर रहा है। लगता है, **दाल में कुछ काला है।**
2. कलेजे पर पत्थर रखना (धैर्य धारण करना)– बेटे की दुखद मृत्यु की खबर सुनकर माँ ने कलेजे पर पत्थर रख लिया और एक शब्द नहीं कहा।
3. चार चाँद लगाना (शोभा बढ़ाना)– गहनों के उपयोग से औरत की सुंदरता में चार चाँद लग जाते हैं।

लोकोक्तियों का अर्थ और वाक्य प्रयोग

1. एक पंथ दो काज (एक माध्यम से दो काम होना)– जयपुर गया तो था ऑफिस के काम से, पर बीच के खाली समय में मैं जयपुर, अजमेर तथा पुष्कर भी घूम लिया।
2. एक म्यान में दो तलवार (दो विरोधी लोग एक साथ नहीं रह सकते)– रोहन और मोहन इतना लड़ते हैं कि दादाजी कहने लगे, 'भाई एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकतीं।'
3. साँच को आँच नहीं (सच हमेशा शक्तिशाली होता है)– तुमने ईमानदारी से काम किया है, इसलिए डरने की कोई बात नहीं, साँच को आँच नहीं।

✤✤

17 अपठित बोध

अपठित गद्यांश

➡ **लिखित में**

1. **(क)** लोकगीत प्राय: मौखिक रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी या एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होते रहते हैं।

(ख) लोकगीत, लोकजीवन का दर्पण होते हैं जिनमें लोक संस्कृति के समस्त पक्षों का वर्णन होता है।

(ग) लोकगीत धर्म, सामाजिक रीति-रिवाज, दर्शन, ज्योतिष, सदाचार उपदेश, लोक-व्यवहार, मनोरंजन तथा जीवन के समस्त पक्षों का संचित कोष होते हैं।

(घ) 'लोकगीतों का महत्त्व'

2. **(क)** अजंता की गुफाओं में मूर्तिकला, चित्रकला और वास्तुकला का अद्‌भुत सौंदर्य दिखाई देता है।

(ख) नदी से बहकर पानी बड़े-बड़े शिलाखंडों से टकराता हुआ पानी की गुफाओं के नीचे एक कुंड में इकट्ठा होता है।

(ग) कला की अभिव्यक्ति के लिए जिन लोगों ने अजंता के अपूर्व स्थान को चुना, उन्हें लेखक ने शत-शत प्रणाम किया है।

(घ) अजंता की छोटी-बड़ी मिलाकर उन्तीस गुफाएँ हैं, जिनके दो वर्ग - स्तूप गुफा और विहार गुफा हैं।

3. (क) (ii) सफलता की (ख) (i) मनोयोग (ग) (iii) मन से संचालित (घ) (iv) अधैर्य

4. (क) (iv) शिक्षा (ख)(iii) प्रतिष्ठा (ग) (ii) पशु (घ) (ii) इत

अपठित पद्यांश

➡ **लिखित में**

1. **(क)** फूल देवों के सिर पर नहीं चढ़ना चाहता।

(ख) फूल सम्राटों के शव पर नहीं डाला जाना चाहता।

(ग) फूल बनमाली से निवेदन करता है कि मुझे उस पथ पर फेंक देना, जहाँ से मातृभूमि पर शीश चढ़ाने वाले अनेक वीर जा रहे हों।

(घ) फूल वीरों के रास्ते में इसलिए बिछना चाहता है ताकि वह मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले उन देशभक्तों के चरणों की धूल बनकर अपने जीवन को सार्थक कर सके और उनके बलिदान का सम्मान कर सके।

2. (क) (ii) कर्म करना। (ख) (ii) श्रम से। (ग) (iii) पसीना। (घ) (ii) श्रम से।

✤✤

18 संवाद लेखन

1. **मोबाइल फोन के दुष्प्रभावों पर दो दोस्तों का संवाद—**

अमन : अरे राहुल, कैसे हो? कल तुम कक्षा में नहीं दिखे?

राहुल : अरे अमन, सच बताऊँ? रात को देर तक मोबाइल पर गेम खेलता रहा। सुबह उठ ही नहीं पाया।

अमन : तुम भी! हर दिन यही कहानी। तुम्हें पता है, मोबाइल का अत्यधिक उपयोग हमारे स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर डाल रहा है?

राहुल : क्या बुरा असर? सब तो इसी पर निर्भर हैं आजकल।

अमन : सुनो, सबसे पहले तो नींद पर असर। नीली रोशनी (ब्लू लाइट) मेलाटोनिन हार्मोन घटाती है, जिससे नींद ठीक से नहीं आती। तुम्हारी आँखें लाल क्यों हैं, सोचते हो?

राहुल : हाँ... थोड़ा धुँधला भी दिखता है कभी-कभी।

अमन : दूसरा, शारीरिक गतिविधि कम। पहले हम बाहर खेलते थे, अब सब मोबाइल में चिपके रहते हैं। इससे मोटापा, कमर दर्द, गर्दन में अकड़न जैसी समस्याएँ हो रही हैं।

राहुल : पर सारा काम, पढ़ाई, दोस्तों से बात— सब तो मोबाइल पर ही होता है।

अमन : सही है, लेकिन संतुलन जरूरी है। तीसरा और बड़ा खतरा— मानसिक स्वास्थ्य। लगातार सोशल मीडिया में दूसरों का ''परिपूर्ण जीवन'' यानी ''सुखद जीवन'' देखकर तुलना, अकेलापन, चिंता बढ़ रही है।

राहुल : तुम ठीक कह रहे हो। मेरा ध्यान और पढ़ाई का समय भी प्रभावित हो रहा है। चलो, आज से ही कोशिश शुरू करते हैं।

अमन : बिल्कुल! तकनीक हमारी सेवा करे, हम उसके गुलाम न बनें। समझदारी से उपयोग करेंगे तो फायदा ही फायदा है।

राहुल : धन्यवाद अमन, मेरी आँखें खोलने के लिए।

2. बढ़ती महँगाई पर दो गृहणियों का संवाद

(सुबह का समय, बाजार में सब्जी खरीदते हुए)

शोभा : अरे सीमा, तुम भी यहाँ! क्या ले रही हो?

सीमा : अरे शोभा दीदी, सलाद पत्ता और टमाटर देख रही हूँ। पर आजकल तो दाम देखकर मन मारना पड़ता है।

शोभा : सही कह रही हो। कल ही आलू 40 रुपए किलो था, आज बोल रहे हैं 50। बस, सीधे आसमान छू रही हैं कीमतें।

सीमा : सब्जी क्या सभी चीजों के दाम तेजी से बढ़ रहे हैं।

शोभा : हमारे वक्त में तो 250 रुपए में पूरा हफ्ता चल जाता था। आज तो 1500 में भी हाथ खाली लौटते हैं। तेल, दाल, चावल, सब्जी— हर चीज में दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ोत्तरी।

सीमा : सरकार कुछ करती नहीं। वो कहते हैं 'महँगाई पर नियंत्रण है।' हमारी रसोई तो जानती है कि नियंत्रण कहाँ है! बस चुनाव के वक्त कुछ सस्ते अनाज का वादा और फिर भूल जाते हैं।

शोभा : चलो, अब मुझे भी आलू-टमाटर लेकर घर जाना है। तुम भी जल्दी करो, धूप तेज हो रही है।

सीमा : ठीक है दीदी, फिर मिलेंगे। ईश्वर करे महँगाई कम हो।

3. कलम और पुस्तक के बीच संवाद

(रात का समय, अलमारी में रखी एक किताब के पन्नों से दबी हुई कलम और उसके बगल में रखी हुई पुरानी पुस्तक के बीच बातचीत)

कलम : (उबासी लेते हुए) उफ्फ... कितना भारी है यह पन्ना जो मुझ पर पड़ा है। सारा दिन इसी तरह दबी रहती हूँ।

पुस्तक : (मुस्कुराते हुए) अरे कलम बहन, शिकायत क्यों कर रही हो? मैं तो सालों से इन अलमारियों में बंद हूँ। तुम्हारी कम से कम रोज थोड़ी सैर तो हो जाती है।

कलम : सैर? बस, उस बच्चे की उँगलियों में फँसकर उसे होमवर्क करवाना, या उस दफ्तरवाले की जेब में सफर करना... यही जीवन है मेरा। पर तुम? तुम तो

बहुत सम्मानित हो। लोग तुम्हें पढ़ते हैं, सँभालकर रखते हैं।

पुस्तक : सच कहा। मैं भी ज्ञान की धरोहर हूँ। कविता, कहानी, इतिहास, विज्ञान सब कुछ मेरे पन्नों में सुरक्षित है। मैं चुपचाप पड़ी रहती हूँ, पर जब कोई मुझे खोलता है, तो मैं उसे एक नई दुनिया में ले जाती हूँ।

कलम : तुम्हारे बिना तो मेरा भी कोई मूल्य नहीं। मैं स्याही से खेलती हूँ, तुम उसे अमर बना देती हो। मैं शब्द बनाती हूँ, तुम उन्हें सहेजकर रखती हो।

पुस्तक : हम दोनों का रिश्ता तो अटूट है।

कलम : सही कहा। हम दोनों साथी हैं— एक ऐसी जोड़ी जो विचारों को जन्म देती है और उन्हें अमर बनाती है।

पुस्तक : तो फिर शिकायत किस बात की? चाहे हमारा रूप बदले या स्थान, हमारा काम तो वही रहेगा— इंसान की सोच को आकार देना।

4. डॉक्टर और एक ग्रामीण नागरिक के बीच संवाद

किसान : (दरवाजे में खड़े होकर) नमस्ते डॉक्टर साहब।

डॉक्टर : नमस्ते, नमस्ते। आइए, भीतर आइए। बैठिए। क्या तकलीफ है आपको?

किसान : (कुर्सी पर बैठते हुए) डॉक्टर साहब, पिछले कुछ दिनों से बहुत कमजोरी लगती है। सिर भारी रहता है और कभी-कभी चक्कर भी आ जाते हैं।

डॉक्टर : ठीक है, पहले ब्लड प्रेशर चेक करते हैं। (ब्लड प्रेशर लेते हुए) आपका नाम बताइए और उम्र क्या है?

किसान : नाम है रामसिंह। उम्र है... लगभग 55 साल, डॉक्टर साहब।

डॉक्टर : ब्लड प्रेशर तो बहुत ज्यादा है, रामसिंह जी। क्या खाने-पीने में कोई लापरवाही करते हैं? नमक ज्यादा तो नहीं खाते?

किसान : अरे डॉक्टर साहब, मेहनत का काम है। दिनभर खेत में। नमक-रोटी तो मजबूती देती है। बिना नमक के तो काम ही नहीं होता।

डॉक्टर : अच्छा, अब आपकी कुछ और जाँच करनी होगी— शुगर और कोलेस्ट्रॉल की। कल सुबह खाली पेट आ जाइए। अभी के लिए यह दवा लीजिए, समय पर खाएँ।

किसान : धन्यवाद डॉक्टर साहब। आपने बहुत समय दिया।

डॉक्टर : कोई बात नहीं। यही तो हमारा काम है। नमस्ते।

5. पर्यावरण सुरक्षा को लेकर दो छात्रों के बीच संवाद

अजय : (एक प्लास्टिक की बोतल उठाते हुए) देखो शिवानी, यह फिर कोई प्लास्टिक की बोतल फेंक गया। लोगों को समझ क्यों नहीं आता कि प्लास्टिक हजारों सालों तक नष्ट नहीं होता!

शिवानी : सच कह रहे हो। मैंने कल एक डॉक्यूमेंट्री देखी थी— समुद्र में मछलियाँ प्लास्टिक खा रही हैं, और फिर वही प्लास्टिक हमारे खाने में आ जाता है। यह चक्र बहुत खतरनाक है।

अजय : सबसे बड़ी समस्या है— पेड़ों की कटाई। हमारे शहर में इतनी गर्मी क्यों हो गई है? क्योंकि पेड़ कम हो गए हैं, कंक्रीट के जंगल बढ़ गए हैं।

शिवानी : और वायु प्रदूषण? सुबह-सुबह धुंध जैसा दिखता है। साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है। बच्चों में अस्थमा बढ़ रहा है। क्या हम सच में यही भविष्य देना चाहते हैं अगली पीढ़ी को?

अजय : ठीक कहा। पर सिर्फ बातें करने से कुछ नहीं होगा। हमें कुछ करना होगा। तुम्हारे क्या विचार हैं?

शिवानी: सबसे पहले तो हमें अपने विद्यालय से शुरुआत करनी चाहिए। 'प्लास्टिक-मुक्त विद्यालय' बना सकते हैं। सभी छात्र अपने घर से कपड़े का थैला और स्टील की बोतल लाएँ।

अजय : बहुत अच्छा विचार है! और हम 'वृक्षारोपण अभियान' भी चला सकते हैं। प्रत्येक छात्र एक पौधा लगाए और उसकी देखभाल करने की जिम्मेदारी ले। मेरा तो सुझाव है कि हम नीम, पीपल, बरगद जैसे पेड़ लगाएँ जो पर्यावरण के लिए अच्छे हैं।

शिवानी: पानी बचाने पर भी ध्यान देना होगा। विद्यालय में जहाँ-जहाँ नल टपक रहे हैं, उनकी मरम्मत करवानी चाहिए। और हम सब 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग' के बारे में जागरूकता फैला सकते हैं।

अजय : हम एक 'पर्यावरण क्लब' बना सकते हैं। उसमें सभी कक्षाओं के विद्यार्थी शामिल होंगे। साप्ताहिक बैठक करेंगे, नए विचार साझा करेंगे।

शिवानी: और सोशल मीडिया का सदुपयोग करें! हम एक यू-ट्यूब चैनल या 'इंस्टाग्राम' पेज बनाकर छोटे-छोटे वीडियोज के माध्यम से जागरूकता फैला सकते हैं। 'मेरा पौधा, मेरी जिम्मेदारी' जैसे हैशटैग चला सकते हैं।

अजय : महान विचार! चलो, कल ही हम प्रधानाचार्य जी से मिलकर इन सभी सुझावों पर चर्चा करते हैं। मुझे विश्वास है कि वे हमारा साथ देंगे।

✤✤

19 विज्ञापन लेखन

(क) साइकिल

साइकिल

सेहत भी बचत भी / रोज चलाएँ साइकिल / स्वस्थ रहें हर पल

❁ बिना पेट्रोल ❁ बिना प्रदूषण

जानवरों के लिए विशेष लाभ / आज ही अपनाएँ साइकिल

सुरक्षित भविष्य की ओर कदम

जानकारी हेतु संपर्क करें: मोबाइल नं. : 9xxxxxxxxx

(ख) स्टेशनरी सामान

स्टेशनरी सामान

सस्ता भी • सुंदर भी

सभी प्रकार की स्टेशनरी वस्तुओं की बिक्री उचित दामों पर।

❁ किताबें ❁ कापियाँ ❁ पेंसिल ❁ पेन ❁ फाइल ❁ डायरी ❁ ड्रॉइंग बुक

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

पताः

मालिक का नाम :

छात्र-छात्राओं के लिए विशेष छूट उपलब्ध

(ग) केश-किंग आयुर्वेदिक तेल

केश किंग आयुर्वेदिक तेल

बालों का राजा- मजबूती बढ़ाए, झड़ना घटाए, चमक लौटाए।

❁ बालों को जड़ से मजबूत बनाए ❁ बालों को झड़ने से रोके

❁ नए बालों की बढ़त में मददगार ❁ 100% आयुर्वेदिक एवं प्राकृतिक

सुंदर, घने व काले बालों का दावा

प्राप्त करें : आपके नजदीकी मेडिकल स्टोर से

पता : . कस्टमर केयर नं. : 9xxxxxxxxx

20 अनुच्छेद-लेखन

1. विद्यार्थी का कर्तव्य

विद्यार्थी जीवन, मानव जीवन की नींव होता है। इस समय में सीखे गए संस्कार, ज्ञान और अनुशासन भविष्य की इमारत को मजबूत एवं सुदृढ़ बनाते हैं। एक आदर्श विद्यार्थी का प्रथम कर्तव्य है— लगन और ईमानदारी से अध्ययन करना। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ उसे सामान्य ज्ञान, नैतिक शिक्षा और व्यावहारिक कौशल पर भी ध्यान देना चाहिए।

दूसरा महत्वपूर्ण कर्तव्य है गुरुजनों और माता-पिता का आदर करना, क्योंकि वे ही मार्गदर्शन के स्रोत हैं। साथ ही, विद्यार्थी को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए खेल-कूद व शारीरिक व्यायाम को दिनचर्या में शामिल करना चाहिए।

समाज के प्रति भी विद्यार्थी का दायित्व है। उसे पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक कार्यों में भाग लेना और देश की उन्नति के लिए जागरूक रहना चाहिए। अनुशासन, समय का पालन और ईमानदारी विद्यार्थी के आभूषण हैं।

यह समय आत्मनिर्माण का है। अच्छे चरित्र, दृढ़ संकल्प और सेवा-भाव से ही विद्यार्थी जीवन सार्थक बनता है और वह एक जिम्मेदार नागरिक बनकर राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकता है।

2. भारतीय किसान की दशा

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ लगभग 60 प्रतिशत आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। परन्तु आज भारतीय किसान की दशा चिंताजनक है। किसान प्रकृति की अनिश्चितता के साथ-साथ बाजार की अनिश्चितताओं से जूझ रहा है। बीज, खाद, कीटनाशक और डीजल की बढ़ती कीमतें, फसल का उचित मूल्य न मिलना और कर्ज का बोझ उसकी पीड़ा को बढ़ा रहा है।

सिंचाई के लिए पर्याप्त जल की कमी और जलवायु परिवर्तन का प्रकोप भी नई चुनौतियाँ पैदा कर रहा है। किसानों को अपनी उपज बेचने के लिए अक्सर बिचौलियों पर निर्भर रहना पड़ता है, जो उनका बड़ा हिस्सा हड़प लेते हैं। सरकारी योजनाएँ कागजों तक सीमित रह जाती हैं, जिनका लाभ हर छोटे किसान तक नहीं पहुँच पाता।

इन समस्याओं के बीच किसान निरंतर संघर्षरत है। आत्महत्या के आँकड़े उसकी हताशा का दर्द बयाँ करते हैं। यह आवश्यक है कि किसानों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य मिले, कृषि को उन्नत और विज्ञानसम्मत बनाया जाए तथा उनके कल्याण के लिए ठोस कदम उठाए जाएँ। सच्चे अर्थों में देश की प्रगति तभी संभव है, जब अन्नदाता समृद्ध और खुशहाल होगा।

3. भारतीय मजदूर की दशा

भारतीय मजदूर देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, परन्तु उसकी दशा अधिकांशत: दयनीय बनी हुई है। चाहे वह निर्माण स्थल का श्रमिक हो, कारखाने का कर्मचारी हो, या घरेलू सहायक - उसे न्यूनतम मजदूरी, उचित कार्य-घंटे और सुरक्षित कार्य वातावरण जैसी मूलभूत सुविधाएँ भी प्राय: नसीब नहीं होतीं। असंगठित क्षेत्र में तो स्थिति और भी गंभीर है।

अधिकांश मजदूर अशिक्षा, गरीबी और असुरक्षा के दुष्चक्र में फँसे हैं। उन्हें सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य बीमा या भविष्य निधि का लाभ नहीं मिल पाता। मौसमी रोजगार, महँगाई और कर्ज के बोझ ने उनके जीवन को और दूभर बना दिया है। कोरोना काल में तो इन प्रवासी मजदूरों की पदयात्रा ने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर खींचा था।

सरकार द्वारा श्रम कानूनों में सुधार और 'एक राष्ट्र, एक राशन कार्ड' जैसी योजनाएँ सकारात्मक कदम हैं, पर इनका लाभ हर मजदूर तक पहुँचाना अभी भी एक बड़ी चुनौती है। मजदूरों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना, उनके कौशल विकास पर ध्यान देना और उन्हें सम्मानजनक जीवन स्तर प्रदान करना राष्ट्रीय विकास के लिए अत्यावश्यक है। देश तभी सही अर्थों में प्रगति करेगा, जब उसके इस मेहनती आधार स्तंभ की दशा में सुधार होगा।

4. विज्ञापन

आधुनिक युग में विज्ञापन व्यापार और जनसंचार का एक अभिन्न अंग बन गया है। यह किसी उत्पाद, सेवा या विचार को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत कर जनमानस तक पहुँचाने का एक प्रभावी माध्यम है। अखबार, टेलीविजन, रेडियो से लेकर आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया और सर्च इंजन विज्ञापनों के प्रमुख प्लेटफार्म बन गए हैं।

विज्ञापनों का सृजनात्मक पक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है— एक आकर्षक नारा, मन को छू लेने वाली कहानी और दृश्य-श्रव्य प्रभाव उपभोक्ता के मन पर अमिट छाप छोड़ते हैं। परन्तु विज्ञापनों की एक सीमा और जिम्मेदारी भी है। कई बार ये भ्रमपूर्ण दावे या अतिशयोक्ति से भरे होते हैं, जो उपभोक्ताओं को गुमराह कर सकते हैं। बच्चों पर विज्ञापनों का प्रभाव विशेष रूप से चिंता का विषय है।

इसलिए आवश्यक है कि विज्ञापन सत्यापित, नैतिक और सामाजिक दायित्व का निर्वाह करें।

सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का पालन और स्व-नियमन भी जरूरी है। एक संतुलित विज्ञापन न केवल व्यवसाय को बढ़ावा देता है, बल्कि समाज को सही जानकारी देकर शिक्षित भी कर सकता है।

5. दैव-दैव आलसी पुकारा

''दैव-दैव आलसी पुकारा'' एक प्रसिद्ध कहावत है जो आलस्य की प्रवृत्ति पर करारी चोट करती है। इसका सीधा अर्थ है कि आलसी व्यक्ति हर सफलता-असफलता के लिए भाग्य या ईश्वर को दोष देता रहता है, जबकि वास्तविकता यह है कि उसकी असफलता का मुख्य कारण उसका स्वयं का आलस्य और प्रयासों की कमी है।

यह कहावत मानव व्यवहार की गहरी समझ को दर्शाती है। आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। यह उसकी क्षमताओं को दबा देता है, उत्साह को नष्ट कर देता है और उसे निरंतर टालमटोल की आदत में डाल देता है। फिर जब वह अपने लक्ष्य में असफल होता है, तो अपनी इस कमजोरी को स्वीकार करने के बजाय वह भाग्य को कोसने लगता है। वह सोचता है कि ईश्वर ने उसके साथ अन्याय किया है, जबकि सत्य यह है कि उसने स्वयं परिश्रम का सही मार्ग नहीं अपनाया।

इसलिए यह कहावत हमें एक महत्वपूर्ण शिक्षा देती है— सफलता के लिए केवल भाग्य का सहारा लेना व्यर्थ है। कर्म ही सफलता की कुंजी है। मेहनत, लगन और दृढ़ संकल्प से मनुष्य अपने भाग्य को स्वयं लिख सकता है। ईश्वर उसी की मदद करता है जो स्वयं अपनी मदद करता है। अत: हमें आलस्य त्यागकर कर्मशील बनना चाहिए और अपने जीवन की जिम्मेदारी स्वयं लेनी चाहिए।

6. खेलों का महत्व

खेल मानव जीवन का एक अभिन्न और महत्वपूर्ण अंग हैं। ये केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के प्रभावी माध्यम हैं। खेलों से व्यक्ति का शरीर स्वस्थ, स्फूर्तिवान और रोगमुक्त रहता है। नियमित व्यायाम और शारीरिक गतिविधि हृदय, मांसपेशियों और हड्डियों को मजबूत बनाती है।

मानसिक स्तर पर खेल एकाग्रता, धैर्य, निर्णय क्षमता और तनाव प्रबंधन में सहायक होते हैं। खेल के मैदान से व्यक्ति को जीवन के अनमोल पाठ मिलते हैं— अनुशासन, टीम भावना, नेतृत्व, सहयोग और सफलता-विफलता को समान भाव से स्वीकार करना। यह आत्मविश्वास और संघर्ष की भावना भी पैदा करते हैं।

सामाजिक दृष्टि से खेल राष्ट्रीय एकता, सद्भाव और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को मजबूत करने में सहायक होते हैं। आज खेल एक उज्ज्वल कैरियर का विकल्प भी बन गया है। अत: प्रत्येक विद्यालय और समाज में खेलों को प्रोत्साहन देना चाहिए। खेल मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होते हैं और एक स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

7. समय किसी के लिए नहीं रुकता

समय संसार का सबसे निष्ठुर और निरंतर गतिशील तत्व है। यह चक्र सदैव एक समान गति से चलता रहता है, न किसी की प्रार्थना से ठहरता है, न किसी की विवशता से। प्राचीन काल से ही मनुष्य समय के इस अविराम प्रवाह को रोकने की व्यर्थ चेष्टा करता रहा है, किंतु समय ने सिद्ध कर दिया है कि वह एक अजेय शक्ति है।

समय का यह गुण हमें एक गंभीर जीवन-पाठ सिखाता है— समय का सदुपयोग। चूँकि समय लौटकर नहीं आता, इसलिए इसके प्रत्येक क्षण को सार्थकता से जीना और उपयोग करना हमारा परम कर्तव्य है। जो व्यक्ति समय को हाथ से फिसलने देता है, वह जीवन में पछतावे के अलावा कुछ नहीं पाता। इतिहास गवाह है कि सफलता उन्हीं के कदम चूमती है जो समय के मूल्य को पहचानते हैं और उसे अनुशासन एवं योजना के साथ व्यतीत करते हैं।

अत: हमें समय की गति से विचलित हुए बिना, अपने वर्तमान क्षण को उत्कृष्ट कार्यों से भर देना चाहिए। समय किसी का इंतजार नहीं करता, इसलिए सफलता प्राप्ति के लिए आज, इसी क्षण से प्रयास आरंभ कर देना ही सबसे बुद्धिमानी का कार्य है।

8. भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम संस्कृतियों में से एक है। यह 'अनेकता में एकता' के सिद्धांत पर आधारित है, जहाँ विभिन्न धर्म, भाषा, पहनावा और रीति-रिवाज एक सूत्र में बँधे हैं। इसकी नींव सहिष्णुता, अहिंसा, समन्वय और सार्वभौमिक भाईचारे जैसे मूल्यों पर टिकी है।

भारतीय संस्कृति जीवन दृष्टि को संपूर्णता में देखती है। इसके आध्यात्मिक साहित्य— वेद, उपनिषद, गीता— मानव को आत्मज्ञान और धर्म के मार्ग पर चलना सिखाते हैं। यहाँ के त्योहार, जैसे दीवाली, ईद, होली, क्रिसमस, सभी को एक साथ मिलजुलकर मनाने की परंपरा है। संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला के क्षेत्र में भारत ने अद्वितीय योगदान दिया है।

सदियों के उतार-चढ़ाव के बाद भी भारतीय संस्कृति ने अपनी मूलभूत पहचान बनाए रखी है, जबकि नए विचारों को आत्मसात करने की क्षमता भी दिखाई है। आज आधुनिकता और वैश्वीकरण के दौर में भारतीय संस्कृति का दायित्व और बढ़ गया है— अपनी मूल्यवान परंपराओं की रक्षा करते हुए प्रगति के पथ पर आगे बढ़ना। यही इसकी सबसे बड़ी शक्ति और सार्वभौमिक महत्व है।

9. वनों का महत्व

वन पृथ्वी के फेफड़े और प्रकृति का अनमोल उपहार हैं। ये हमारे पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सर्वप्रथम, वन वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करके ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जिससे जलवायु संतुलन बना रहता है और वैश्विक तापमान नियंत्रित रहता है।

वन जल चक्र को नियंत्रित करते हैं, मृदा अपरदन रोकते हैं और भूजल स्तर को बढ़ाते हैं। ये अनेक जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के प्राकृतिक आवास हैं, जिससे जैव विविधता संरक्षित होती है। आदिवासी और ग्रामीण समुदायों के लिए वन जीवन-यापन के स्रोत हैं, जो उन्हें लकड़ी, औषधियाँ, फल-फूल और अन्य संसाधन प्रदान करते हैं।

आर्थिक दृष्टि से वन लकड़ी, कागज, रबर, गोंद जैसे उत्पादों का मुख्य स्रोत हैं और पर्यटन के केंद्र भी हैं। परंतु वनों की अन्धाधुन्ध कटाई से पर्यावरण संकट गहरा रहा है। अत: वन संरक्षण और नए वृक्षारोपण की आवश्यकता जरूरी है। वन हमारी धरोहर हैं और इनकी रक्षा करना हम सभी का नैतिक दायित्व है।

10. पर्यावरण प्रदूषण

पर्यावरण प्रदूषण आज मानवता के समक्ष सबसे गंभीर चुनौती बन चुका है। यह प्रदूषण वायु, जल, भूमि और ध्वनि के स्तर पर अपने विषैले पैर पसार रहा है, जिसका प्रत्यक्ष दुष्प्रभाव मानव स्वास्थ्य, पारिस्थितिकी तंत्र और जलवायु पर पड़ रहा है। वाहनों और उद्योगों से निकलने वाला धुआँ, कूड़े-कचरे का अनियंत्रित निपटान, रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग और प्लास्टिक की बढ़ती मात्रा इसके प्रमुख कारण हैं।

इस समस्या ने ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत का क्षरण, अम्ल वर्षा और जैव विविधता के ह्रास जैसे संकटों को जन्म दिया है। बढ़ता प्रदूषण श्वास रोग, कैंसर और हृदय रोगों में वृद्धि का सीधा कारण बन रहा है।

इस चुनौती से निपटने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर ठोस प्रयास आवश्यक हैं। वृक्षारोपण को बढ़ावा, सौर ऊर्जा जैसे वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग, जल संरक्षण, कचरा प्रबंधन और पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना समय की माँग है। सरकार द्वारा सख्त कानून और उद्योगों द्वारा हरित प्रौद्योगिकी अपनाना भी अपेक्षित है। याद रखें, स्वच्छ पर्यावरण ही स्वस्थ जीवन की पहली शर्त है।

✤✤

21 पत्र लेखन

1. अपने जन्मदिन पर मित्र द्वारा भेजे गए उपहार के लिए उसे धन्यवाद पत्र लिखिए।

प्रेषक का पता:
102, सूर्यकिरण अपार्टमेंट
राजनगर, गाजियाबाद
उत्तर प्रदेश - 201001
दिनांक: 15 अप्रैल, 2026
प्रिय मित्र रोहित,
सप्रेम नमस्ते।

विषय: जन्मदिन के उपहार के लिए धन्यवाद।

तुम्हारा प्यार भरा पत्र और सुंदर उपहार आज सुबह मिला। जन्मदिन पर तुम्हारा याद आना और इतना सोच-समझकर तुमने जो पेन-स्टैंड सेट भेजा है, उसने मेरे दिन को वाकई खास बना दिया। वह पेन-स्टैंड बिल्कुल मेरी टेबल पर सज गया है और उस पर लिखा तुम्हारा संदेश मेरे लिए बहुत कीमती है।

इस व्यस्त दुनिया में तुम्हारी यह स्नेहभरी याद और तुम्हारा समय निकालकर उपहार चुनना, मेरे लिए तुम्हारी दोस्ती की सच्चाई को और भी गहरा कर गया है। यह उपहार मेरे साथ हमेशा तुम्हारी याद दिलाता रहेगा।

तुम्हारा धन्यवाद कभी पूरा नहीं हो सकता, पर आज फिर से बहुत-बहुत शुक्रिया! जल्द ही मिलते हैं, और तुमसे मिलकर व्यक्तिगत रूप से अपना प्यार और आभार जताऊँगा।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,
आकाश

2. अपने मित्र को अपने साथ कुछ समय बिताने के लिए पत्र लिखिए।

प्रेषक का पता:
21, नवीन नगर,
वसंत विहार,
दिल्ली - 110017
दिनांक: 18 अप्रैल, 20--
प्रिय मित्र राजीव,
सप्रेम नमस्ते।

तुम्हारा पत्र पाकर बहुत खुशी हुई। पत्र में तुमने अपनी व्यस्तता का जिक्र किया था, और मुझे उसका पूरा अहसास है। परन्तु आज तुम्हें यह पत्र लिखने का मेरा एक खास उद्देश्य है।

हमें एक-दूसरे से मिले काफी समय हो गया है । स्कूल के वो दिन, जब हम साथ पढ़ते, साथ खेलते और छुट्टियों में घूमने जाते थे, आज भी याद आते हैं। आजकल की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में हम एक-दूसरे से दूर होते जा रहे हैं, लेकिन मेरा मानना है कि दोस्ती के रिश्ते को समय-समय पर निभाने की जरूरत होती है।

इसीलिए मैं चाहता हूँ कि तुम अगले सप्ताह कुछ दिनों के लिए मेरे घर आ जाओ। हम साथ में पुराने दिनों की यादें ताजा करेंगे, अपने अनुभव साझा करेंगे और कुछ नई जगहें भी घूम सकते हैं। मेरे यहाँ का मौसम अभी बहुत सुहावना है और हम ट्रैकिंग के लिए भी जा सकते हैं।

मैं जानता हूँ काम के चलते तुम व्यस्त रहते हो, लेकिन दोस्ती के लिए कुछ समय निकालना भी जरूरी है। मेरे माता-पिता भी तुम्हें याद कर रहे हैं और तुम्हारे आने का इंतजार कर रहे हैं।

कृपया अपने आने की सूचना अवश्य देना, ताकि मैं तुम्हारे स्वागत की उचित व्यवस्था कर सकूँ।

तुम्हारी प्रतीक्षा में।
तुम्हारा अभिन्न मित्र,
विकास

3. नगर-निगम अधिकारी को नगर में डेंगू-चिकनगुनिया फैलने के कारण एवं उससे निपटने की तैयारियों के संबंध में पत्र लिखिए।

प्रेषक का पता:
ए-102, शांति अपार्टमेंट,
सेक्टर 12, रोहिणी,
दिल्ली - 110085
दिनांक: 20 अप्रैल, 20--
सेवा में,

मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी,
दिल्ली नगर निगम,
दिल्ली - 110002

विषय: नगर क्षेत्र में डेंगू-चिकनगुनिया के बढ़ते प्रसार एवं नियंत्रण हेतु तत्काल कार्रवाई हेतु निवेदन।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे रोहिणी, सेक्टर 12 के आवासीय क्षेत्र में पिछले कुछ सप्ताहों से डेंगू एवं चिकनगुनिया बुखार के मामलों में खतरनाक वृद्धि हुई है। स्थानीय निवासियों में चिंता का माहौल है।

अनुरोधित तत्काल कार्रवाई—

1. क्षेत्र में तत्काल व्यापक फॉगिंग एवं कीटनाशक छिड़काव अभियान चलाया जाए।
2. खुले पानी के जमाव वाले सभी स्थानों की सफाई एवं कीटाणुशोधन किया जाए।
3. कचरा प्रबंधन व्यवस्था को दुरुस्त किया जाए और कूड़ा जमा करने वाले स्थानों की नियमित रूप से सफाई की जाए।
4. सार्वजनिक स्वास्थ्य शिविर लगाकर नि:शुल्क जाँच एवं परामर्श की व्यवस्था की जाए।
5. लाउडस्पीकर, पम्प्लेट व सोशल मीडिया के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया जाए।

हम आशा करते हैं कि आप इस गंभीर स्वास्थ्य समस्या पर त्वरित ध्यान देकर नगरवासियों के स्वास्थ्य की रक्षा करेंगे। हम सहयोग हेतु तत्पर हैं।

धन्यवाद।
भवदीय,
आपका विश्वासी,
संजय कुमार
(सेक्टर 12 निवासी संघ के सचिव)
संपर्क सूत्र: 9876543210

4. अपनी सखी को वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई पत्र लिखिए।

प्रेषक का पता:
401, आनंद अपार्टमेंट,
लक्ष्मी नगर,
दिल्ली - 110092
दिनांक: 25 अप्रैल, 20--

प्रिय सखी प्रीति,
सप्रेम नमस्ते।

आज ही अखबार में तुम्हारे विद्यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिता के परिणाम देखे, और यह जानकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा कि तुमने इसमें प्रथम स्थान प्राप्त किया है! मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो।

यह उपलब्धि तुम्हारी कड़ी मेहनत, तर्कशक्ति और आत्मविश्वास का जीता-जागता प्रमाण है। प्रतियोगिता में तुम्हारे विरोधियों को तुम्हारी वाक्पटुता और ज्ञान के आगे झुकना ही पड़ा होगा। यह सफलता निश्चित ही तुम्हारे भविष्य के लिए एक मजबूत आधार बनेगी।

इस शानदार जीत के लिए तुम्हारे माता-पिता और गुरुजनों को भी मेरा प्रणाम और धन्यवाद, जिनके मार्गदर्शन ने तुम्हें यह मुकाम हासिल करने में सहायता की।

तुम्हारी यह उपलब्धि मुझे भी गर्व और प्रेरणा से भर देती है। जल्द ही मिलकर तुम्हें व्यक्तिगत रूप से बधाई दूँगी और इस खुशी का जश्न मनाएँगे।

फिर से बहुत-बहुत बधाई!
तुम्हारी प्रिय सखी,
आकांक्षा

5. विद्यालय में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम का वर्णन करते हुए नानाजी को पत्र लिखिए।

प्रेषक का पता:
कक्षा 10-बी,
सरस्वती विद्या मंदिर,
राजपुर रोड,
देहरादून, उत्तराखंड
दिनांक: 25 अप्रैल, 20--

पूज्य नानाजी,
सादर प्रणाम।

आशा करती हूँ कि आप सपरिवार सकुशल होंगे। मैं यहाँ पूर्णत: स्वस्थ हूँ और अपनी पढ़ाई में व्यस्त हूँ। आज आपको पत्र लिखने का एक विशेष उद्देश्य है। मैं आपको हमारे विद्यालय में आयोजित एक अद्भुत वृक्षारोपण कार्यक्रम के

बारे में बताना चाहती हूँ, जो कल यानी 24 अप्रैल को संपन्न हुआ।

नानाजी, कार्यक्रम का शुभारंभ हमारे प्रधानाचार्य श्री रामनाथ जी ने दीप प्रज्वलित करके किया।

इसके बाद हर छात्र-छात्रा को एक पौधा और आवश्यक औजार दिए गए। मैंने एक नीम का पौधा लगाया है, क्योंकि आपने हमेशा कहा है कि नीम एक वरदान है। मेरे मित्रों ने आम, जामुन, पीपल और गुलमोहर के पौधे लगाए। हम सबने मिलकर गड्ढे खोदे, पौधों को सावधानी से रोपा, उनकी जड़ों में खाद डाली और पानी दिया। प्रत्येक पौधे पर लगाए गए नामपट्ट पर हमने अपना नाम और तिथि लिखी, ताकि हम उसकी नियमित देखभाल की जिम्मेदारी ले सकें।

इस कार्यक्रम ने हमें प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी का एहसास कराया। मैंने इस अनुभव के कुछ चित्र भी लिए हैं, जो आपसे मिलने पर आपको दिखाऊँगी।

आपके आशीष की कामना करती हूँ। माताजी को मेरा प्रणाम कहिए और नानीजी को मेरा चरणस्पर्श।

आपकी प्यारी नातिन,
अंजलि

6. आपकी पासबुक खो गई है, ऐसी सूचना देते हुए नई पासबुक जारी करने हेतु बैंक अधिकारी को पत्र लिखिए।

प्रेषक का पता:
ए-15, शांतिनिकेतन,
सेक्टर 7, वसंत कुंज,
नई दिल्ली - 110070
दिनांक: 26 अप्रैल, 20--
सेवा में,
शाखा प्रबंधक,
भारतीय स्टेट बैंक,
वसंत कुंज शाखा,
नई दिल्ली - 110070

विषय: पासबुक खो जाने की सूचना एवं नई पासबुक जारी करने हेतु अनुरोध।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपकी बैंक शाखा में बचत खाता संख्या SB-456789123 का धारक हूँ। मुझे यह बताते हुए अत्यंत खेद है कि मेरी पासबुक गत सोमवार, 21 अप्रैल, 20-- से लापता है। मैंने अपने घर एवं कार्यालय में पूरी तलाशी ले ली है, परंतु वह नहीं मिली है।

खाता विवरण—

- खाताधारक का नाम: राजेश कुमार शर्मा
- खाता संख्या : SB-456789123
- पता: ए-15, शांतिनिकेतन अपार्टमेंट, सेक्टर 7, वसंत कुंज, नई दिल्ली - 110070
- मोबाइल नंबर: 98765XXXXX

अत: मैं आपसे तत्काल प्रभाव से उक्त खाते की पासबुक को अमान्य (ब्लॉक) घोषित करने एवं मुझे एक नई पासबुक जारी करने का विनम्र अनुरोध करता हूँ।

मेरे खाते की सुरक्षा एवं इस विषय में त्वरित कार्रवाई हेतु मैं आपका आभारी रहूँगा। मेरे मोबाइल नंबर पर किसी भी आवश्यक जानकारी के लिए संपर्क किया जा सकता है।

धन्यवाद।
भवदीय,
राजेश कुमार शर्मा
संपर्क: 98765XXXXX
(संलग्न: आधार कार्ड की स्वप्रमाणित प्रति)

7. कक्षा में गंदगी का वर्णन करते हुए उसे बदलवाने का अनुरोध करते हेतु प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

प्रेषक का पता:
कक्षा 9-बी, शारदा विद्या मंदिर,
रामनगर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश - 221008
दिनांक: 27 अप्रैल, 20--
सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,
शारदा विद्या मंदिर, वाराणसी

विषय: कक्षा में अस्वच्छता की स्थिति एवं तत्काल सुधार हेतु अनुरोध।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हम कक्षा 9-बी के छात्र आपका ध्यान हमारी कक्षा की दयनीय स्वच्छता की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। पिछले कई दिनों से हमारी कक्षा में सफाई की स्थिति बेहद खराब है, जिससे हमारे स्वास्थ्य और पढ़ाई दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

महोदय, यह अस्वच्छ वातावरण न केवल हमारी एकाग्रता भंग करता है बल्कि मच्छरों एवं कीटाणुओं के पनपने का कारण भी बन रहा है। हम सभी छात्र एक स्वच्छ और स्वस्थ शिक्षण वातावरण में पढ़ना चाहते हैं।

अतः हमारा विनम्र अनुरोध है कि आप निम्नलिखित कार्रवाई करने की कृपा करें—

1. कक्षा की तत्काल गहरी सफाई एवं कीटाणुरहितीकरण करवाया जाए।
2. टूटे हुए फर्नीचर की मरम्मत या प्रतिस्थापन किया जाए।
3. बाथरूम की नियमित सफाई और पानी की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।
4. कक्षा में कूड़ेदान की पर्याप्त संख्या उपलब्ध कराई जाए।

हम विश्वास करते हैं कि आप हमारी इस समस्या पर शीघ्र ध्यान देंगे। हम सभी छात्र आपके आदेशानुसार सफाई अभियान में सहयोग देने के लिए तैयार हैं।

धन्यवाद।

भवदीय,
कक्षा 9-बी के छात्रों की ओर से
अंकित शर्मा
(कक्षा प्रतिनिधि)

8. आप किसी कारणवश 5 दिन के लिए विद्यालय नहीं जा सकते, कारण बताते हेतु प्रधानाचार्य को अवकाश के लिए पत्र लिखिए।

प्रेषक का पता:
कक्षा 10-अ,
श्री राम विद्या मंदिर,
गांधी रोड,
जयपुर, राजस्थान
दिनांक: 28 अप्रैल 2025

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
श्री राम विद्या मंदिर, जयपुर

विषय: पाँच दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं, आपके विद्यालय की कक्षा 10-अ की छात्रा साक्षी शर्मा, 1 मई से 5 मई 20-- तक (दोनों दिन सम्मिलित) विद्यालय उपस्थित नहीं हो सकूँगी। इसका कारण यह है कि मेरी बड़ी बहन का विवाह 3 मई 20-- को दिल्ली में निर्धारित है, और इस शुभ अवसर पर हमारे पूरे परिवार को दिल्ली जाना है तथा विवाह संबंधी तैयारियों में भाग लेना है।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि मुझे उक्त अवधि के लिए अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। इसके लिए मैं आपकी अत्यंत आभारी रहूँगी।

धन्यवाद।

आपकी आज्ञाकारी छात्रा,
साक्षी शर्मा
कक्षा 10-अ
अनुक्रमांक-25

9. हिंदुस्तान समाचार पत्र में आपका लेख छपवाने हेतु संपादक को पत्र लिखिए।

प्रेषक का पता:
ए-12, विश्वास नगर,
द्वारका,
दिल्ली - 110078
दिनांक: 29 अप्रैल, 20--

सेवा में,
संपादक महोदय,
हिन्दुस्तान समाचार पत्र,
बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली - 110002

विषय: समाचार पत्र में लेख प्रकाशन हेतु प्रस्ताव

महोदय,

मैं एक नवोदित लेखक और समाज सेवी हूँ तथा नियमित रूप से आपका समाचार पत्र पढ़ता हूँ। मैंने देखा है कि आपका पत्र सार्थक और जनहित से जुड़े विषयों को प्रमुखता से प्रकाशित करता है। इसी के मद्देनजर, मैं आपके सम्मानित पत्र के 'युवा दृष्टिकोण' या 'समसामयिक विषय' स्तंभ में अपना एक लेख प्रकाशित कराना चाहता हूँ।

मैंने यह लेख मौलिक रूप से तैयार किया है और इसमें तथ्यात्मक जानकारी, वर्तमान संदर्भ एवं युवाओं के लिए प्रेरणादायक सुझाव सम्मिलित हैं। मुझे विश्वास है कि यह लेख आपके पाठकों, विशेषकर युवा वर्ग के लिए उपयोगी एवं विचारोत्तेजक सिद्ध होगा।

मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इस लेख को प्रकाशन हेतु स्वीकार करने की कृपा करें। लेख की हार्ड कॉपी अथवा सॉफ्ट कॉपी (पी.डी.एफ. फाइल) आपकी आवश्यकता अनुसार उपलब्ध कराई जा सकती है।

आशा है आप इस प्रस्ताव पर सकारात्मक विचार करेंगे। प्रतीक्षा में रहूँगा।

धन्यवाद।
भवदीय,
राजीव मिश्रा
संपर्क सूत्र: 98765XXXXX
ईमेल: rajeevmishra@email-com

10. आपके पिताजी का तबादला हो गया है। विद्यालय स्थानांतरण प्रमाण पत्र हेतु प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

प्रेषक का पता:
कक्षा 12-सी,
केन्द्रीय विद्यालय,
सैनिक कॉलोनी,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश - 226002
दिनांक: 30 अप्रैल, 20--
सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
केन्द्रीय विद्यालय, लखनऊ

विषय: पिताजी के स्थानांतरण के कारण विद्यालय स्थानांतरण प्रमाण-पत्र हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं, आपके विद्यालय के कक्षा 12-सी का छात्र मयंक सिंह, अनुक्रमांक 36, आपका ध्यान एक महत्वपूर्ण विषय की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मेरे पिता श्री अमर सिंह, जो भारतीय रेलवे में अधिकारी हैं, का आदेशानुसार स्थानांतरण कोलकाता हो गया है। हमारे पूरे परिवार को मई के अंतिम सप्ताह तक कोलकाता स्थानांतरित होना अनिवार्य है।

इस कारण मैं इस विद्यालय में अब अध्ययन जारी नहीं रख सकता। अत: मुझे वहाँ के एक विद्यालय में प्रवेश लेना आवश्यक है। प्रवेश हेतु मुझे विद्यालय स्थानांतरण प्रमाण-पत्र की आवश्यकता होगी।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मुझे मेरा शैक्षणिक रिकॉर्ड, प्रवेश प्रमाण-पत्र, स्थानांतरण प्रमाण-पत्र एवं चरित्र प्रमाण-पत्र प्रदान करने की कृपा करें। इसके लिए मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।

धन्यवाद।
भवदीय,
मयंक सिंह
कक्षा 12-सी, अनुक्रमांक-36
अभिभावक के हस्ताक्षर
(श्री अमर सिंह)
संपर्क: 9876543210

11. दिल्ली परिवहन के अधिकारी को अपने कालोनी तक चलने वाली बसों की व्यवस्था से अवगत कराने हेतु पत्र लिखिए।

प्रेषक का पता:
ए-45, विकास नगर,
बैंगनी कॉलोनी,
दिल्ली - 110075
दिनांक: 11 मई, 20--
सेवा में,

मुख्य अधिकारी महोदय, दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी), केन्द्रीय कार्यालय, ईपीपीओ भवन, नई दिल्ली - 110002

विषय: बैंगनी कॉलोनी तक परिवहन सेवाओं के विस्तार एवं बस आवृत्ति बढ़ाने हेतु निवेदन।

महोदय,

हम बैंगनी कॉलोनी, विकास नगर के निवासियों की ओर से आपका ध्यान क्षेत्र में सार्वजनिक परिवहन, विशेषकर डीटीसी बस सेवाओं की कमी और अव्यवस्था की ओर आकर्षित करना चाहते हैं।

हमारी कॉलोनी में लगभग 5000 परिवार निवास करते हैं, जिनमें छात्र, कार्यालय जाने वाले लोग और वरिष्ठ नागरिक शामिल हैं। वर्तमान में केवल बस नंबर 543 इस क्षेत्र से गुजरती है, जिसकी आवृत्ति बहुत कम (लगभग 45-60 मिनट के अंतराल पर) है। इसके अलावा बस अक्सर भरी हुई आती है और निर्धारित समय पर नहीं चलती।

यह स्थिति कॉलोनीवासियों, विशेषकर कामकाजी महिलाओं, छात्रों और बुजुर्गों के लिए काफी परेशानी का कारण बनी हुई है। उन्हें कार्यालय, विद्यालय और अस्पताल जाने में बहुत

कठिनाई होती है। निजी वाहनों पर निर्भरता बढ़ने से यातायात और प्रदूषण की समस्या भी बढ़ रही है।

हम आशा करते हैं कि आप इस समस्या पर त्वरित ध्यान देंगे और सार्वजनिक परिवहन की सुविधा बढ़ाकर हमारे क्षेत्र के निवासियों को राहत दिलाएँगे। हम आपके साथ सहयोग के लिए तैयार हैं।

भवदीय,
बैंगनी कॉलोनी निवासी संघ की ओर से
सुरेश कुमार
(अध्यक्ष)
संपर्क सूत्र: 98912XXXXX
ईमेल: bangnicolony@email-com

22 निबंध लेखन

1. मेरे सपनों का भारत

प्रस्तावना— मेरे सपनों का भारत वह है जो अपनी प्राचीन गौरवशाली संस्कृति और आधुनिक प्रगति के बीच सामंजस्य बिठाता है। एक ऐसा देश जहाँ "अनेकता में एकता" केवल नारा नहीं, बल्कि जीवन का आधार हो। यह भारत शांति, समृद्धि और न्याय पर टिका होगा, जहाँ हर नागरिक को गरिमा और अवसर के समान अधिकार प्राप्त होंगे।

शिक्षित और स्वस्थ भारत— मेरे सपनों के भारत में हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलेगी, चाहे वह गाँव का हो या शहर का। शिक्षा रटंत नहीं, बल्कि रचनात्मक सोच विकसित करेगी। साथ ही, हर व्यक्ति की पहुँच बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं तक होगी। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र आधुनिक उपकरणों से लैस होंगे और निवारक स्वास्थ्य देखभाल पर जोर दिया जाएगा।

समृद्ध और स्वावलम्बी भारत— मैं एक ऐसे भारत का सपना देखता हूँ जहाँ आर्थिक असमानता न्यूनतम हो। किसान समृद्ध हों, उन्हें उनकी उपज का उचित मूल्य मिले। छोटे उद्योग और स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन मिले, ताकि युवाओं को रोजगार के अवसर स्थानीय स्तर पर ही मिल सकें। देश आत्मनिर्भर हो, पर वैश्विक सहयोग के लिए भी खुला रहे।

स्वच्छ और हरित भारत— मेरा आदर्श भारत प्रदूषण मुक्त होगा। नदियाँ स्वच्छ होंगी, हवा शुद्ध होगी और हर शहर हरा-भरा होगा। सौर ऊर्जा जैसे नवीकरणीय स्रोतों का व्यापक उपयोग होगा। वन्य जीवन सुरक्षित होगा और पर्यावरण संरक्षण हमारी संस्कृति का हिस्सा बनेगा।

सशक्त और एकजुट भारत— मेरे सपनों का भारत सामाजिक कलह से मुक्त होगा। सभी धर्म, जाति और लिंग के लोग सम्मान के साथ-साथ रहेंगे। महिलाएँ सशक्त होंगी, हर क्षेत्र में उनकी भागीदारी बढ़ेगी। युवा शक्ति देश के विकास में सक्रिय भूमिका निभाएगी। प्रशासन पारदर्शी और जवाबदेह होगा।

निष्कर्ष— मेरे सपनों का भारत कोई काल्पनिक स्वप्नलोक नहीं, बल्कि एक ऐसा व्यावहारिक लक्ष्य है जिसे हम सब मिलकर प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए हमें अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए, ईमानदारी और लगन से काम करना होगा। शिक्षा, सद्भाव और प्रगति के मार्ग पर चलकर हम ऐसे भारत का निर्माण कर सकते हैं जो विश्व गुरु बने और हर भारतीय को गर्व का अनुभव कराए।

2. मोबाइल फोन और छात्र जीवन

प्रस्तावना— आज का युग डिजिटल युग है और मोबाइल फोन इसकी सबसे प्रभावशाली तकनीक बन चुका है। विशेषकर छात्र जीवन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा है। मोबाइल फोन एक ओर जहाँ ज्ञान का अथाह स्रोत बन गया है, वहीं दूसरी ओर यह छात्रों के लिए चुनौती भी बनकर उभरा है। इसका उपयोग और दुरुपयोग दोनों ही छात्र के वर्तमान और भविष्य को प्रभावित करते हैं।

मोबाइल के लाभ— मोबाइल फोन ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। ऑनलाइन कक्षाएँ, शैक्षिक ऐप, ई-पुस्तकें और शिक्षण वीडियोज ज्ञान प्राप्ति को सुलभ और रोचक बनाते हैं। त्वरित सूचना पहुँच, समस्या समाधान और संचार के

माध्यम के रूप में भी मोबाइल अत्यंत उपयोगी है। आपातकालीन स्थिति में यह सुरक्षा कवच का काम करता है।

मोबाइल के दुष्परिणाम— मोबाइल का अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग घातक सिद्ध हो रहा है। छात्र इसके व्यसन के शिकार हो रहे हैं, जिससे उनकी पढ़ाई का समय और एकाग्रता दोनों प्रभावित होते हैं। नीली रोशनी (ब्लू लाइट) से आँखें कमजोर होती हैं, नींद में कमी आती है और शारीरिक निष्क्रियता बढ़ती है। गेमिंग और सोशल मीडिया में अत्यधिक समय व्यतीत करने से शैक्षिक प्रदर्शन गिरता है।

सामाजिक एवं मानसिक पहलू— मोबाइल के कारण वास्तविक दुनिया के सामाजिक संबंध कमजोर हो रहे हैं। परिवार और दोस्तों के साथ वास्तविक बातचीत का स्थान स्क्रीन टाइम ले रहा है। सोशल मीडिया पर दूसरों की 'आदर्श' जीवनशैली देखकर छात्रों में हीन भावना, चिंता और अवसाद बढ़ रहा है। साइबर बुलिंग और अनुचित सामग्री तक पहुँच नई समस्याएँ उत्पन्न कर रही हैं।

उचित उपयोग का मार्ग— आवश्यकता इस बात की है कि मोबाइल को सहायक उपकरण बनाया जाए, न कि उसे जीवन का केंद्र। छात्रों को समय सीमा तय करनी चाहिए, पढ़ाई के समय मोबाइल से दूरी रखनी चाहिए और शैक्षिक ऐप्स को प्राथमिकता देनी चाहिए। अभिभावकों को भी बच्चों के मोबाइल उपयोग पर सकारात्मक निगरानी रखनी चाहिए। डिजिटल डिटॉक्स, शारीरिक गतिविधियों और वास्तविक सामाजिक संपर्क को प्रोत्साहित करना चाहिए।

निष्कर्ष— मोबाइल फोन स्वयं में न अच्छा है न बुरा; यह उपयोग करने वाले पर निर्भर करता है। छात्र जीवन की सफलता के लिए संयम और संतुलन आवश्यक है। यदि मोबाइल का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए, तो यह ज्ञान की चाबी बन सकता है। हमें प्रौद्योगिकी के माध्यम से आगे बढ़ना है, पर उसके गुलाम नहीं बनना। एक जिम्मेदार छात्र के रूप में हमें मोबाइल को सही दिशा देकर अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग करना चाहिए।

3. आतंकवाद: एक समस्या

प्रस्तावना— आतंकवाद आज विश्व की सबसे गंभीर और जटिल समस्याओं में से एक है। यह हिंसा और भय का ऐसा साधन है जिसके द्वारा आतंकवादी संगठन, राजनीतिक या वैचारिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निर्दोष नागरिकों को निशाना बनाते हैं। यह घृणा, असहिष्णुता और हिंसा पर आधारित वह विषबीज है जो पूरे समाज की शांति, सुरक्षा और विकास को खतरे में डालता है। 9/11 की घटना से लेकर मुंबई हमले तक, आतंकवाद ने अपना क्रूर रूप दुनिया के सामने प्रस्तुत किया है।

आतंकवाद के कारण— आतंकवाद के कारण बहुआयामी हैं। राजनीतिक अस्थिरता, साम्प्रदायिक कट्टरता, आर्थिक विषमता और सामाजिक अन्याय इसके प्रमुख कारक हैं। कुछ समूह धर्म के नाम पर हिंसा को बढ़ावा देते हैं, तो कुछ अलगाववादी विचारधारा से प्रेरित होते हैं। युवाओं में बेरोजगारी और निराशा उन्हें आतंकवाद की ओर धकेलती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ देश आतंकवाद को राज्य संरक्षण देकर इस समस्या को और विकराल बना रहे हैं।

भारत पर प्रभाव— भारत लंबे समय से आतंकवाद की चुनौती झेल रहा है। जम्मू-कश्मीर में अलगाववादी हिंसा, पूर्वोत्तर राज्यों में उग्रवाद और माओवादी (नक्सल) प्रभावित क्षेत्रों में हिंसा ने देश की अखंडता और शांति को खतरे में डाला है। 2008 के मुंबई हमले जैसी घटनाओं ने पूरे राष्ट्र को स्तब्ध कर दिया। आतंकवाद ने न केवल जान-माल की क्षति की है, बल्कि विभिन्न समुदायों के बीच विश्वास और सद्भाव को भी प्रभावित किया है।

आतंकवाद के परिणाम— आतंकवाद के परिणाम अत्यंत विनाशकारी होते हैं। सबसे पहले, इससे निर्दोष लोगों की जान चली जाती है और परिवार उजड़ जाते हैं। आर्थिक रूप से देश की प्रगति बाधित होती है— पर्यटन उद्योग प्रभावित होता है, विदेशी निवेश घटता है और सुरक्षा व्यय में वृद्धि होती है। सामाजिक स्तर पर यह भय, अविश्वास और असुरक्षा का वातावरण बनाता है, जो राष्ट्रीय एकता के लिए खतरनाक है।

समाधान के उपाय— आतंकवाद से निपटने के लिए बहु-स्तरीय रणनीति की आवश्यकता है। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से आतंकवादी संगठनों के वित्त पोषण और आश्रय स्थलों को रोकना होगा। राष्ट्रीय स्तर पर खुफिया तंत्र को मजबूत करना, सीमा सुरक्षा बढ़ाना और कड़े कानून बनाना आवश्यक है। साथ ही, सामाजिक-आर्थिक उपाय भी जरूरी हैं— युवाओं को रोजगार और शिक्षा के अवसर देना, साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाना और आतंकवाद के विरुद्ध जनजागरूकता फैलाना। धार्मिक और सामाजिक नेताओं को सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

निष्कर्ष— आतंकवाद मानवता के विरुद्ध एक अपराध है जिसका किसी भी धर्म, विचारधारा या समाज से कोई संबंध नहीं है। इसके समाधान के लिए वैश्विक एकजुटता, राष्ट्रीय दृढ़ संकल्प और सामाजिक सहयोग आवश्यक है। हमें यह समझना होगा कि हिंसा कभी समाधान नहीं हो सकती। शांति, संवाद और विकास के मार्ग पर चलकर ही हम आतंकवाद जैसी विकराल समस्या पर विजय पा सकते हैं। एक सुरक्षित और शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण के लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना होगा।

4. भारतीय संस्कृति

प्रस्तावना— भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम संस्कृतियों में से एक है, जो पाँच हजार वर्षों से भी अधिक की ऐतिहासिक यात्रा में निरंतर विकसित हुई है। यह एक जीवंत संस्कृति है जिसने समय के थपेड़े सहते हुए भी अपना मूल सार बनाए रखा है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता 'अनेकता में एकता' है- अलग-अलग धर्म, भाषा, रीति-रिवाज और परम्पराएँ एक सूत्र में बँधी हैं।

सांस्कृतिक विविधता— भारत में 22 से अधिक मान्यता प्राप्त भाषाएँ, 1200 से अधिक बोलियाँ, विभिन्न पहनावे और खान-पान की शैलियाँ हैं। यह विविधता हमारी संस्कृति की पहचान है। दीवाली, ईद, क्रिसमस, होली, पोंगल, बैसाखी जैसे त्योहार बिना किसी भेदभाव के सभी द्वारा मनाए जाते हैं। विवाह और अन्य संस्कारों में भी क्षेत्रीय विविधता दिखाई देती है। परंतु सभी में सामाजिक एकता और आध्यात्मिकता का भाव समान रूप से विद्यमान है।

दार्शनिक और आध्यात्मिक आधार— भारतीय संस्कृति का आधार उसके दार्शनिक और आध्यात्मिक साहित्य में निहित है। वेद, उपनिषद, गीता, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों ने जीवन मूल्यों को आकार दिया है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (समस्त पृथ्वी एक परिवार है) और 'सर्वधर्म समभाव' जैसे सिद्धांत सार्वभौमिक भाईचारे की भावना को दर्शाते हैं। यह संस्कृति अहिंसा, सत्य, करुणा और सहिष्णुता जैसे मूल्यों पर टिकी है।

कला और साहित्य में अभिव्यक्ति— भारतीय संस्कृति ने कला के हर क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया है। शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद और खयाल शैलियाँ, भरतनाट्यम और कथक जैसे नृत्य, अजंता-एलोरा की गुफाएँ, ताजमहल जैसी वास्तुकला, कालिदास और तुलसीदास जैसे साहित्यकार - सभी भारतीय संस्कृति की महानता के प्रमाण हैं। लोक कलाएँ और शिल्प भी सांस्तिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

आधुनिकता और संस्कृति का सामंजस्य— वैश्वीकरण और आधुनिकता के दौर में भारतीय संस्कृति नए रूप ले रही है। पश्चिमी प्रभाव के बावजूद, भारतीय मूल्य परिवार प्रणाली, सम्मान और आध्यात्मिकता के प्रति निष्ठा बनाए हुए हैं। युवा पीढ़ी पारंपरिक और आधुनिक तत्वों का सुन्दर समन्वय कर रही है। डिजिटल माध्यमों के जरिए भारतीय संस्कृति का विश्वव्यापी प्रसार हो रहा है।

निष्कर्ष— भारतीय संस्कृति एक जीवंत, समावेशी और मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत संस्कृति है। यह न सिर्फ भारत के लिए, बल्कि पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक है। आज जब दुनिया हिंसा, संघर्ष और भौतिकवाद से जूझ रही है, भारतीय संस्कृति का सन्देश- शांति, सहिष्णुता और आध्यात्मिकता- अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। हमारी जिम्मेदारी है कि हम इस अनमोल सांस्कृतिक विरासत को सँजोए रखें और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाएँ।

✤✤